समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

Postal R.No. UA/DO/16/2015-2017, RNI-NO.38653/80

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक-संरक्षक : युगऋषि पं.श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

1 अक्टूबर 2016
वर्ष-29, अंक-07
शांतिकुंज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि :
27 सितम्बर 2016

E-mail: news.shantikunj@gmail.com, news@awgp.in

वार्षिक चंदा ₹ 40/- विदेश में ₹ 500/- प्रति अंक ₹ 2/-

माया का आवरण हटे, तो साधना सफलता की ओर बढ़े

आत्मस्वरूप का बोध न होना ही अज्ञान, अभाव, अशक्ति का एकमात्र कारण है

जिज्ञासा एक दिव्य विभूति

प्रत्येक मनुष्य को दिव्य जिज्ञासा के रूप में परमात्मा का एक दिव्य अनुदान मिला हुआ है। यह जिज्ञासा ही उसके भावी विकास का आधार बनती है। जिसने भी अपनी जिज्ञासा को आत्म गरिमा के बोध की ओर मोड़ा, उसने अपने जीवन को सार्थक बना लिया। जिस प्रकार सृष्टि के रहस्यों की खोज मानवी जिज्ञासा की ही परिणति है, उसी प्रकार अन्तर्जगत के लीला रहस्यों, अपरिमित सामर्थ्यों की कुंजी भी यही है। बुद्ध, ईसा, विवेकानन्द, दयानन्द, गाँधी, सुकरात सभी ने शाश्वत सत्य के दर्शन को 'स्व पारायण' होकर लक्ष्य बनाया, फलस्वरूप वे लक्ष्य प्राप्ति में सफल भी रहे।'

बहिरंग जगत पर जब एक दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं कि अधिकांश व्यक्ति ऐसे हैं जो अभावग्रस्त, पिछड़ी स्थिति में जी रहे हैं। कुछ ऐसे हैं जो न दुःखी हैं, न सुखी; बस किसी प्रकार यंत्रवत् जी रहे हैं। कुछ ऐसे हैं जिनकी प्रतिभा चमकती है। वे ऊँचा सोचते हैं और ऊँचा करते हैं। अपनी साहसिकता के बल पर वे जहाँ भी चलते हैं, सफलताएँ उनके पीछे-पीछे चलती हैं।

शरीर की दृष्टि से भिन्नता न होने पर भी देखे जाने वाले इस अन्तर का एक मात्र कारण चेतना की स्थिति में भिन्नता का होना है। यदि पतित व यांत्रिक स्थिति वाले व्यक्तियों ने भी समुन्नतों की तरह चेतना को सुसंस्कृत बनाने के प्रयास किए होते तो निश्चय ही वहाँ भी प्रगतिशीलता दृष्टिगोचर होती।

चेतना का परिष्कार

आत्मसाधना का अर्थ है-अपनी चेतना को इतना परिष्कृत करना कि उस पर ब्रह्मचेतना के अनुग्रह का अवतरण सहज सम्भव हो सके। आत्मसत्ता का चुम्बकत्व इस अनुदान को सहज आकर्षित कर सकता है, लेकिन पहले इसकी महत्ता को जानें तो सही। सूक्ष्म जगत की विभूतियों को पकड़ने हेतु सामर्थ्य की आवश्यकता होती है। वह अपने आपको जाने बिना सम्भव नहीं। बिजली घर की बिजली हमारे घर के बल्बों में उछल कर नहीं चली आती। इसके लिए सम्बन्ध जोड़ने वाले मध्यवर्ती तार बिछाने पड़ते हैं। ब्रह्माण्डीय चेतना से सम्बन्ध जोड़ने के लिए आदान-प्रदान के जो सूत्र जोड़े जाते हैं, उसके लिए 'आत्मा' रूपी 'सब स्टेशन' को बड़े 'पॉवर हाउस' से जुड़ सकने योग्य भी बनाया जाता है। इससे कम में आत्मिक उपलब्धियों की सिद्धि नहीं होती।

अपनी सोच बदलनी होगी

आज मानकर यह चला जा रहा है कि शरीर एवं मन तक ही हमारी सत्ता सीमित है। हमें इन्हीं के लिए सुख-साधनों को जुटाने में निरत रहना है। इसी उपहासास्पद अज्ञान का नाम 'माया' है। वस्तुतः जड़ पंच तत्त्वों से बने इस कलेवर का मूल्य नगण्य है। बुढ़ापा, बीमारी और मौत उसे पानी के बुलबुले की तरह गला देती है। वस्त्रों की तरह जल्दी-जल्दी फटता और जीर्ण होता रहता है। ऐसे कलेवर की सुसज्जा ही जीवन का लक्ष्य बन जाय एवं आत्मोत्कर्ष के उद्देश्य को विस्मृत कर दिया जाय तो यह बुद्धिमान कहे जाने वाले मनुष्य की सबसे बड़ी अबुद्धिमत्ता ही होगी। लगभग समस्त मानव समाज आज इसी आत्म प्रवंचना में मूर्च्छित पड़ा है।

सोचा यह जाना चाहिए कि शरीर में आत्मा का भी अस्तित्व है। प्रगति का अवसर आत्मा को भी मिलना चाहिए। बाह्य सुविधाओं की तरह यदि आन्तरिक गरिमा का महत्त्व समझा जा सके तो निश्चित रूप से मनुष्य को आत्मिक प्रगति की उपयोगिता समझ में आयेगी।

आत्मबोध और उसकी परिणति

आत्मा वस्तुतः परमात्मा का पवित्र अंश है। वह श्रेष्ठतम उत्कृष्टताओं से परिपूर्ण है। वह लेने की आकांक्षा से दूर, प्रेम की उदात्त भावना से परिपूर्ण है। आत्मा को उसी स्तर का होना चाहिए, जैसा कि परमात्मा है। परमेश्वर ने मनुष्य को अपना युवराज चुना ही इसीलिए है कि वह सृष्टि को और सुन्दर, सुसज्जित बना सके। उसका चिन्तन और कर्तृत्व इसी दिशा में नियोजित रहना चाहिए। यही है आत्मबोध, यही है आत्मिक जीवनक्रम।

वस्तुतः आत्मावलम्बी व्यक्ति विवेकयुक्त दूरदर्शिता को ही अपना सम्बल बनाते हैं। उनका मार्गदर्शक उनका अपना अन्तःकरण होता है। ओछे लोग जिसे लाभ समझते हैं, वह यदि उनके विवेक की कसौटी पर हानि सिद्ध होता है, तो वे एकाकी निर्णय लेकर सत्पथ पर अकेले ही चल पड़ते हैं, भले ही उन्मादियों की भीड़ उनका उपहास, असहयोग या विरोध करती रहे। वह अपना भाग्य स्वयं निर्मित कर वहाँ जा पहुँचते हैं जहाँ के लिए उनकी आत्मा का अवतरण इस धरती पर हुआ है।

आत्मबल का अर्थ है ईश्वरीय बल। इसका अर्थ हुआ परमेश्वर की परिधि में आने वाली समस्त शक्तियों और वस्तुओं पर आधिपत्य। आत्मबल उपार्जित व्यक्ति ही शक्ति का अवतार कहा जाता है। मनोगत दुर्भावनाएँ और शरीरगत दुष्प्रवृत्तियों का जो जितना परिशोधन करता चला जाता है, उसी अनुपात में उसका आत्मतेज निखरता चला जाता है। इससे उस तेजस्वी आत्मा को ही नहीं, समस्त संसार का भी कल्याण होता है।

आत्मबल अभिवृद्धि का दूसरा चिह्न वहाँ देखा जाता है, जहाँ कोई व्यक्ति मोहान्ध जनसमूह के परामर्शों को उपेक्षा के गर्त में पटकता हुआ आदर्शवादी रीति-नीति अपनाते हुए एकाकी चल पड़ता है। वह वही कर गुजरता है, जिसे करने के लिए उसकी अन्तरात्मा उसे सतत कहती-पुकारती रहती है व जिन कृत्यों के कारण उसे इतिहास में सदैव याद रखा जाता है।

साधना का दिव्य प्रयोजन

मनुष्य राजकुमार है और ईश्वर उसका परम पिता। इन दोनों के बीच जो दूरी बनी है, वह अज्ञानान्धकार के कायिक कलेवर के कारण है। इस सम्बन्ध विच्छेद को मिटाकर दोनों का मिलन करा देना ही 'साधना' है। साधना का प्रयोजन है मनुष्य को उसकी गरिमा का बोध कराना एवं कुत्साओं और कुण्ठाओं की उन जंजीरों को काट डालना, जो जीव और ईश्वर के मिलन में बाधा बनकर खड़ी है। तपश्चर्याएँ, तितिक्षाएँ, योग-साधनाएँ, प्रायश्चित्त, उपासना इसी उद्देश्य को पूरा करती हैं, जिसमें जन्म-जन्मान्तरों से संचित कुसंस्कारों का निराकरण किया जाता है एवं देव शक्तियों के अभिवर्धन का पथ प्रशस्त होता है।

इन सब दिव्य सामर्थ्यों से युक्त परम सत्ता मनुष्य में बीज रूप में विद्यमान है। दुर्बुद्धि और दुष्प्रवृत्ति रूपी व्यामोह ही उन्हें मूर्च्छित बनाये हुए हैं। वे हट जायें तो मनुष्य में अनायास ही ईश्वर की झाँकी हो सकती है। वह अपने आपको लघु से महान्, आत्मा से परमात्मा, नर से नारायण के रूप में विकसित हुआ प्रत्यक्ष अनुभव कर सकता है। ऋद्धि-सिद्धियों की बात तो गौण है। जो उस सत्ता के साथ अपना सम्बन्ध बना सका, उसे न अपने लिए कुछ अभाव-असन्तोष रहता है, न वह दूसरों को मुक्तहस्त से लुटाने में असमर्थ ही रह पाता है।

अन्तरात्मा की विशेषता यही देवत्व है। जिसका देवत्व जग जाता है, वह दैत्य पक्ष के तर्कों को निरस्त करता चला जाता है। ऐसा व्यक्ति कभी सो नहीं सकता। उसकी माँग, पुकार बढ़ती चली जायेगी। अन्तः में घुसे दानव के साथ उसका मल्लयुद्ध तीव्र ही होता चला जायेगा।

मनुष्य के लिए यही श्रेष्ठ है कि वह अपनी विस्मृत गरिमा को जाने, ईश्वर को अपने अन्तःकरण के आँगन में क्रीड़ा-कल्लोल करने का अवसर दे। सूर्य प्रकाश लिए हमारे द्वार पर खड़ा है, हम अपने दरवाजे व खिड़कियाँ भर खोल दें। ईश्वर से जुड़ने की, देवत्व अभिवर्धन की, यही पहली अनिवार्य शर्त है।

इसी तथ्य को गीताकार ने स्पष्ट करते हुए कहा है–''उद्धरेदात्मनात्मानं'' अपना उद्धार आप करो। अपनी प्रगति का पथ स्वयं प्रशस्त करो। जो माँगना है, अपने जीवन देवता से माँगो। बाहर दीखने वाली हर वस्तु का उद्गम केन्द्र अपना ही अन्तरंग है। आत्मदेव की साधना ही जीवन देवता की उपासना है।

पं. श्रीराम शर्मा आचार्य वाङ्मय खंड-24, पृष्ठ-6.52-54 से संकलित

युवा नायक मनीष चौरिया को

पूरे गायत्री परिवार की ओर से भावभरी श्रद्धांजलि

मिशन के लिए अपना सब कुछ समर्पित कर देने की उत्कट आकांक्षा, अहर्निश सक्रियता, हँसमुख स्वभाव, सेवाभाव; यही थी शांतिकुंज के लाडले बेटे, पूरे देश में युवा जागरण आन्दोलन से जुड़े हर व्यक्ति के चहेते 'मनीष' की पहचान। शांतिकुंज के युवा प्रकोष्ठ का यह दैदीप्यमान सितारा अनंत चतुर्दर्शी-15 सितम्बर 2016 के लिए अपनी जीवन लीला समाप्त कर गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गया।

समाचार सबको चौंका देने वाला था। विश्वास करना आसान नहीं था। पर नियति पर किसी का वश नहीं। संभवतः गुरुसत्ता ने उस दिव्य आत्मा के लिए कोई बड़ी भूमिका निर्धारित कर रखी हो। 14 सितम्बर को ही तो वह पास के नरेन्द्र नगर में कार्यक्रम कराकर लौटे थे। सुबह हल्का-सा सीने में दर्द हुआ, तुरन्त बड़े अस्पताल ले जाया गया, लेकिन अस्पताल की सेवाएँ लेने से पहले ही उनकी जीवन लीला समाप्त हो गयी, वे गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गये।

आदरणीया शैल जीजी, आदरणीय डॉ. साहब सहित समस्त वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं और पूरे शांतिकुंज परिवार ने अत्यंत भरे हृदय से अपने प्यारे मनीष को श्रद्धांजलि अर्पित कर उसकी पार्थिव देह को उनके गृह नगर भोपाल के लिए विदा किया।

चि. मनीष भोपाल (म.प्र.) निवासी श्रीमती राजश्री एवं श्री रामभरोसे जी चौरिया के सुपुत्र थे। 26 वर्षीय मनीष कम्प्यूटर साइंस से इंजीनियर थे। पिछले साढ़े तीन वर्षों से वे शांतिकुंज के युवा प्रकोष्ठ में सेवाएँ प्रदान कर रहे थे। मिशन की सेवा के संस्कार उन्हें अपने अभिभावकों से विरासत में मिले थे।

स्व. मनीष का अंतिम संस्कार उनके गृह नगर भोपाल के सुभाष नगर विश्राम घाट पर हुआ। केवल भोपाल ही नहीं, पूरे देश की गायत्री परिवार की शाखाओं ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। उनकी आत्मा की शांति-सद्गति के लिए जगह-जगह प्रार्थना सभाएँ हुईं। राष्ट्रीय स्तर पर एक साथ महामृत्युंजय जप का आयोजन भी किया गया।

शक्ति साधना को सार्थक बनायें, अपने अन्दर असुर निकन्दनि दुर्गाशक्ति जगायें

इन्द्र शक्ति एवं तप शक्ति को जागृत करें, वृत्तासुर-असुर वृत्तियों को नष्ट करें

शक्ति साधना के सूत्र

भारतीय संस्कृति, देव संस्कृति में शक्ति साधना को विशेष महत्त्व दिया जाता रहा है। परमात्मसत्ता ने अपनी विभिन्न शक्तिधाराओं, देव शक्तियों को विश्व की व्यवस्था को सुचारु बनाये रखने के लिए नियुक्त कर रखा है। जब तक वे संगठित-अनुशासित रहती हैं, तब तक जीवन की दिशाधारा सही, प्रगतिशील बनी रहती है। परिस्थितियाँ स्वर्गीय, सुख-समृद्धियुक्त बनी बनी रहती हैं। यह अनुशासन ढीले होते हैं तो दैवी शक्तियाँ कमजोर होने लगती हैं, आसुरी शक्तियाँ उन पर हावी हो जाती हैं और परिस्थितियाँ बिगड़ने लगती हैं। देवशक्तियाँ सावधान होकर परमात्म चेतना-आत्म चेतना से प्रेरणा लेकर पुनः अनुशासित होती हैं तो आसुरी शक्तियाँ क्षीण हो जाती हैं और जीवन क्रम, विश्व व्यवस्था फिर से पटरी पर आ जाती हैं।

पौराणिक प्रसंग : इस तथ्य को स्पष्ट करने वाले दो पौराणिक प्रसंग विशेष रूप से प्रचलित हैं। 1.दुर्गाशक्ति के अवतरण से अनेक असुरों के विनाश का और 2.इन्द्र द्वारा ऋषि दधीचि की तपसिद्ध अस्थियों से वज्र बनाकर वृत्तासुर का संहार करने का। यह दोनों जीवन में दिव्यता को प्रभावशाली बनाये रखकर, अनगढ़-असुरता को काबू में रखकर जीवन को श्रेष्ठ-समुन्नत बनाये रखने के लिए शक्ति साधना के सूत्रों-अनुशासनों को स्पष्ट करते हैं। इसके लिए कथानकों में आये शब्दों-सम्बोधनों के तात्विक अर्थ को समझकर निष्कर्ष तक पहुँचना होगा।

शक्ति-सामर्थ्य : तो देवों में भी होती है और असुरों में भी। उसे सधे हुए सदुपयोग में प्रवृत्त करने वाली वृत्तियों को '**देवत्व**' और उसे अनगढ़-असंतुलित ढंग से प्रयुक्त करने वाली वृत्तियों को '**असुरत्व**' का नाम दिया जाता है। जैसे प्रकाश दुर्बल पड़ता है तो अन्धकार प्रभाव दिखाने लगता है, इसी प्रकार जब सद्वृत्तियों के रूप में देवत्व दुर्बल होने लगता है तो दुष्प्रवृत्तियों के रूप में असुरत्व प्रभावी होने लगता है। ऊपर जिन पौराणिक प्रसंगों को उल्लेख किया गया है, वे इसी प्रक्रिया के प्रतीक हैं। युगऋषि ने इसे '**साधना समर**' का सार्थक नाम दिया है। परमात्मा द्वारा प्रदत्त शक्ति सामर्थ्य को देवत्व के अनुशासन में बनाये रखना, उन्हें आसुरी-अनगढ़ता से अप्रभावित रखना ही **साधना समर** है, जिसे आन्तरिक देवासुर संग्राम भी कहा जाता है। हर साधक को साधना क्रम में उक्त दोनों प्रसंगों के तत्त्वदर्शन को समझकर आगे बढ़ना चाहिए।

दुर्गा प्रसंग

देवता व्यक्तिगत विशेषताओं के अहं के कारण संगठित शक्ति का महत्त्व भूल गये। संगठित आसुरी शक्तियों ने उन्हें पराजित कर दिया। प्रजापति से दिशा ली। उन्होंने देवों की विशेषताओं को एकत्रित किया, उससे दुर्गाशक्ति प्रकट हो गयी। उसकी हुँकार मात्र से आसुरी शक्तियाँ काँप गयीं।

महिषासुर : पाशविक प्रवृत्ति, संकीर्ण स्वार्थपरता का प्रतीक है। उसका आधा शरीर मनुष्य और आधा अनगढ़ पशु का है। अर्थात् ऊपर से मनुष्य दिखता है, अन्दर से पशु प्रवृत्तियों से ग्रस्त है।

युगऋषि ने प्रज्ञापुराण में स्पष्ट किया है कि वासना, तृष्णा, अहंता आदि आसुरी प्रवृत्तियाँ संकीर्ण स्वार्थपरता से ही पैदा होती हैं। असुरों का राजा महिषासुर, संकीण स्वार्थों-पशु प्रवृत्तियों से ग्रस्त मनुष्य है। उसके सहयोगी, सूरमा धूम्र विलोचन, रक्तबीज आदि हैं।

धूम्र विलोचन : अर्थात् धुएँ से प्रभावित आँखें, अविवेकी, मोहग्रस्त दृष्टि। उसे ठीक-ठीक दिखाई ही नहीं देता। अविवेकपूर्ण निर्णय करके पाशुविक प्रवृत्तियों को सहयोग देता रहता है।

रक्तबीज : अर्थात् उसके रक्त के कण बीज बनकर भूमि में पुनः विकसित हो जाते हैं। वासना, तृष्णा युक्त विचारों का एक अंश भी मनोभूमि में पड़ते ही नयी वासना-तृष्णा का रूप ले लेता है।

इन दिनों मानव के जीवन में इस प्रकार के राक्षस घुसे हुए हैं। धूम्र विलोचन ने मनुष्य की विवेक बुद्धि को धूमिल बना रखा है। स्वभाव में वासना, तृष्णा के रक्तबीज बसे हुए हैं। वे मनुष्य के अन्दर सक्रिय महिषासुर को समर्थन-पोषण देते रहते हैं। यह राक्षसी कुचक्र मनुष्य के व्यक्तिगत और सामाजिक; दोनों प्रकार के जीवन में चल रहा है। साधना समर को सफल बनाना है तो इन्हें तहस-नहस करने वाली दुर्गाशक्ति व्यक्तिगत और सामाजिक; दोनों प्रकार के जीवन में जाग्रत् करनी पड़ेगी।

दुर्गाशक्ति : उपनिषद् में वर्णन आता है कि परब्रह्म-परमात्मा रूप **विराट पुरुष** के विभिन्न अंगों से प्रकट विभिन्न देव शक्तियाँ मनुष्य के संबंधित अंगों में प्रवेश कर गयीं। मनुष्य की तमाम विशेषताएँ उन्हीं देवशक्तियों की विशेषताएँ हैं। जब तक देव शक्तियाँ स्वयं को अलग-अलग मानती हैं, तब तक उनमें बिखराव रहता है। जब वे प्रजापति के निर्देश पर एकजुट हो जाती हैं तो उनकी संघशक्ति दुर्गाशक्ति बन जाती है। वही संगठित असुरों के कुचक्र को काटने, नष्ट करने में समर्थ होती है।

प्रजापति : मनुष्य में जीव चेतना को प्रजापति माना जा सकता है। जीवन में संव्याप्त विभिन्न घटक उसकी प्रजा है। जब जीवन की सत्शक्तियाँ जीव चेतना के अनुशासन में संगठित हो जाती हैं तो जीवन में दुर्गाशक्ति जाग जाती है। उसके सामने आसुरी प्रवृत्तियाँ टिक नहीं पातीं।

वृत्तासुर प्रसंग

वृत्तासुर : वृत्तियों, संस्कारों में आसुरी तत्त्व शामिल हो जाने का प्रतीक है। मनुष्य के स्थूल उपकरण पाँच ज्ञानेन्द्रियों और पाँच कर्मेन्द्रियों के रूप में प्रतिष्ठित हैं। सभी के अपने-अपने गुण हैं, अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं। संसार में सारे कला-कौशल और संसाधनों के विकास का आधार यही इन्द्रियाँ हैं। इन इन्द्रियरूप उपकरणों का संचालन अन्दर स्थित अंतःकरण के आधार पर होता है। भारतीय मनीषियों ने अन्तःकरण को चार वर्गों में वर्णित किया है, जिन्हें '**अन्तःकरण चतुष्टय**' कहते हैं। वे हैं :- मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार!

मन : चेतना का वह स्तर जिसमें कामनाएँ, आकांक्षायें उभरती हैं। इसलिए मन को ग्यारहवी इन्द्रिय भी माना जाता है। यह जिस इन्द्रिय के साथ हो जाये वह अत्यंत प्रचंड हो जाती है और जहाँ से हट जाये वह इन्द्रिय शान्त हो जाती है। मन में गति और शक्ति है, परन्तु दिशा नहीं है। यह किसी भी भली-बुरी दिशा में सक्रिय होकर रस लेने लगता है।

बुद्धि : इसमें विचार शक्ति होती है। यह उचित-अनुचित हानि-लाभ, श्रेष्ठ-हीन आदि में अन्तर कर पाती है। इसे जाग्रत् और परिष्कृत किया जाय तो यह मन को दिशा दे सकती है।

चित्त : इसमें संस्कार संचित होते हैं। इसमें सन्निहित संस्कारों, प्रवृत्तियों के अनुसार ही मन और बुद्धि सक्रिय होते हैं। हीन संस्कार वाले का मन भी हीन कामनाएँ करता है और बुद्धि भी उसी के समर्थन में अपने तर्क-वितर्क प्रस्तुत करने लगती है। मांसाहारी प्रवृत्ति वाले के मन और बुद्धि मांसाहार के समर्थन में और शाकाहारी के मन-बुद्धि शाकाहार के समर्थन हेतु तत्पर रहते हैं। इसी प्रकार त्यागी प्रवृत्ति वाले के मन-बुद्धि त्याग के पक्ष में और शोषण की प्रवृत्ति वाले के मन-बुद्धि शोषण के पक्ष में सक्रिय रहते हैं।

अहंकार : यह जीव चेतना का स्वबोध है। अहं-'स्व' का आकार। जब वह मायाग्रस्त होकर स्वयं को कमजोर मान लेता है तो आसुरी वृत्तियाँ उस पर हावी हो जाती हैं। जब उसे स्वबोध होता है तो वह वृत्तियों को गढ़ने वाला नियंता बन जाता है।

चित्त की वृत्तियों में जब आसुरी संस्कार बस जाते हैं तो जीवन में '**वृत्तासुर**' का आतंक छा जाता है। देवशक्तियाँ पराजित होने लगती हैं। वृत-उपवास के नियम कुछ दिनों चला तो लिए जाते हैं, किन्तु चित्त की आसुरी प्रवृत्तियाँ उससे प्रभावित नहीं होतीं। बाहरी नियम पूरे कर लेने पर भी वे फिर जाग्रत्, जीवन्त होकर अपना आतंक फैलाने लगती हैं।

वृत्तासुर को मारने के लिए इन्द्र ने तपस्वी दधीचि से सहयोग लिया। अपनी अस्थियों से बने वज्र से वृत्तासुर मारा गया। हर व्यक्तित्व में सक्रिय वृत्तासुर को मारना हो या समाज में व्याप्त वृत्तासुर को निष्क्रिय करना हो, उसके लिए इसी उपाख्यान के अनुसार साधना पुरुषार्थ करना होगा।

इन्द्र : देव शक्तियों के संगठक, संचालक, राजा कहे गये हैं। मनुष्य के अन्दर इन्द्रियों, मन, बुद्धि आदि के रूप में तमाम देव शक्तियाँ सक्रिय हैं। उन्हें मनुष्य के अंदर जीव चेतना के रूप में समझा जा सकता है।

दधीचि : ऋषि तपस्वी हैं। संस्कृत में 'दध' धातु का अर्थ धारण करने वाला या देने में समर्थ होता है। उनका तप इतना गहरा है कि उनकी हड्डियाँ तक उससे प्रभावित हैं। अस्थियों को कायरूपी फल की मिंगी, गुठली जैसा माना जाता है। जब फल पूरी तरह परिपक्व होता है, तभी गुठली में विशेषताएँ पैदा होती हैं। अधपके फल की गुठली उत्पादक नहीं होती। दधीचि का तप परिपक्व है। उनकी काया का कण-कण उस तप से ऊर्जित है। वे तप की ऊर्जा को धारण करने में और उसको उपयोगार्थ देने में समर्थ हैं। वे अपने तप से परिपक्व व्यक्तित्व को प्रसन्नतापूर्वक इन्द्र के हवाले कर देते हैं। इस आदर्श सहगमन से इन्द्र और दधीचि दोनों की साधना सफल हो जाती है।

कथा में दधीचि की माता का नाम 'चिति' और पिता का नाम 'अथर्वण' कहा गया है। चिति का अर्थ है चेतना और अथर्वण का अर्थ है कम्पित न होने वाला-स्थिर, सुदृढ़। साधक की चेतना जब अकम्पित-स्थिर संकल्प से तप-साधना में प्रवृत्त होती है तो साधक में दधीचि के लक्षण पैदा हो जाते हैं। चिति के संकल्प से प्रभावित सभी अंग-अवयव ऊँचे उद्देश्य के लिए तप साधना में लग जाते हैं। जब तप परिपक्व होता है, वह काया के हर कोश को प्रभावित कर लेता है। वे सभी जीव चेतना के निर्देशन में एकजुट होकर सक्रिय हो जाते हैं। असुरता को टिकने न देने का उनका प्रखर संकल्प वज्र बनकर असुरता को तहस-नहस करने में समर्थ हो जाता है।

निष्कर्ष

नवरात्र में साधक शक्ति-साधना करते हैं। उन्हें यह समझ लेना चाहिए कि साधना की शक्ति से उन्हें अपने अंदर की आसुरी शक्तियों, हीन वृत्तियों को निरस्त करके देव शक्तियों, सद्वृत्तियों को जीवन व्यवस्था सौंपनी हैं। इन्द्रियों की वृत्तियाँ, मन की और बुद्धि की वृत्तियाँ यदि अपनी-अपनी विशेषताओं के अहंकार में बिखर गयीं, परस्पर तालमेल, सहयोग, सहगमन बिगड़ गया तो पाश्विक प्रवृत्तियाँ हावी हो जायेंगी। इन सबकी विशेषताएँ जब जीवात्मा के आध्यात्मिक अनुशासन में एकजुट होंगी तो दुर्गाशक्ति जागेगी, तभी साधक अपने साधना-समर में विजयी हो सकता है।

जीवात्मा अपने शुद्ध अहंकार-स्वबोध को जगाये। इन्द्र के रूप में देवशक्तियों को पुनः स्थापित करने की अपनी सामर्थ्य को समझे। प्रचण्ड तप से जीवन के तमाम घटकों को ऊर्जित करे। मनुष्य की धारण करने और देने के सहज उल्लास-दधीचि को सहमत करे। तप से सिद्ध, ऊर्जा को धारण करने और उसके सदुपयोग के लिए वज्र जैसे दृढ़ संकल्प से आघात करे तो आसुरी वृत्तियाँ समाप्त होंगी ही। जीवन में देव शक्तियों की सक्रियता से स्वर्गीय परिस्थितियाँ प्रकट होंगी ही। शक्ति साधना सफलता इस प्रकार सुनिश्चित की जा सकती है।

नवरात्र साधना के क्रम में प्रत्येक साधक को स्थूल कर्मकाण्ड पूरा करने के साथ अपने अन्दर झाँक कर गहन आत्मसमीक्षा करनी चाहिए। दुर्गा द्वारा असुरों के हनन और दधीचि की अस्थियों के वज्र से वृत्तासुर के वध वाले प्रसंग को अपने अन्दर जीवंत रूप से घटित करने का प्रयास करना चाहिए। इससे व्यक्तिगत जीवन और सामाजिक जीवन; दोनों में असुरता को पराजित करके दिव्य स्वर्गीय परिस्थितियों का आनन्द लिया जा सकता है।

जो जितना उदार है, जिसमें जितनी त्याग वृत्ति है, जो अपने प्रयत्न और परिश्रम से दूसरों को जितना सुखी बना सकता है, वह उतना ही बड़ा अध्यात्मवादी होता है।

बनास माता अंचल शुद्धि अभियान

उद्गम से संगम तक की तीसरी जनजागरण यात्रा

राजस्थान के प्रान्तीय संगठन ने 21 अगस्त से 31 अगस्त तक बनास अंचल शुद्धि अभियान के अंतर्गत उद्गम (बेरो का मठ, जिला राजसमंद) से संगम (रामेश्वर घाट, जिला सवाई माधोपुर) तक की जनजागरण यात्रा का आयोजन किया। 700 कि.मी. की यह यात्रा 8 जिलों से होकर गुजरी।

- **700 कि.मी. की यात्रा 8 जिलों से होकर गुजरी**
- **41 स्थानों पर पूजन-अभिषेक, 36 विद्यालय-गोष्ठियाँ**
- **11 स्थानों पर बनास की कथा-व्यथा, दीपयज्ञ**
- **विख्यात तीर्थों में जनजागरूकता समितियाँ बनीं**

सन् 2012 से आरम्भ हुए बनास अंचल शुद्धि अभियान के अन्तर्गत यह तीसरी जनजागरण यात्रा थी। पूरी यात्रा में 300 कार्यकर्त्ताओं ने इस यात्रा में पूर्णकालिक अथवा आंशिक सहभागिता की।

बेरो का मठ, भोजनेश्वर महादेव, नाथद्वारा, नमाना, कुरज, जीतावास, बामनिया कला, गिलुड, मातृकुण्डिया, हमीरगढ़, कानियाखेड़ी, आकोला, त्रिवेणी संगम, मुकुन्द पुरिया, काछोला, शक्करपुरा महादेव, बोयड़ा, गणेश, विशलपुर, देवतमाता छाण, वैष्णवी देवी टोंक, अरणेश्वर महादेव, डूंगरी ग्वालदा रामेश्वर घाट पर सफाई एवं सामूहिक वृक्षारोपण के कार्यक्रम आयोजित हुए।

11 स्थानों पर बनास माता की कथा-व्यथा, दीपयज्ञ एवं यज्ञ के कार्यक्रम हुए। 41 स्थानों पर बनास माता का पूजन, अभिषेक किया गया। 100 से अधिक स्थानों पर ग्राम गोष्ठियाँ एवं नुक्कड़ सभाएँ हुईं। 36 विद्यालयों में गोष्ठियाँ हुईं। 2000 वृक्ष बाँटे गये। 18 स्थानों पर रुद्राभिषेक हुए। 20 हजार रुपये का साहित्य निःशुल्क वितरित किया गया।

इन सभी कार्यक्रमों के माध्यम से बनास तट को स्वच्छ रखने के उपाय अपनाने, खुले में शौच न जाने, जगह-जगह वृक्षारोपण करने जैसे अनेक कार्यों की लिखित जानकारियाँ बनासतट पर रहने वाले लोगों को दी गयीं और संकल्प कराये गये। बेरो के मठ मातृकुण्डिया, त्रिवेणी संगम, बोयड़ा गणेश जी, गौ कर्णेश्वर, वैष्णवी देवी टोंक, देवत माता छाण, ग्वालदा, रामेश्वर घाट आदि सुप्रसिद्ध तीर्थ स्थानों पर बनास शुद्धि के लिए निरंतर जनजागरूकता अभियान चलाने वाली समन्वय समितियों का गठन किया गया है।

रंग लाई एक छोटी-सी पहल

एक सड़क के किनारे सार्वजनिक नल था, जिसका सैकड़ों लोग प्रतिदिन लाभ लेते थे। एक बार वह खराब हो गया, जिसके कारण उससे निरंतर पानी बहने लगा।

नल से पानी बहने का सिलसिला कई दिन तक चलता रहा। उस सड़क से गुजरने वाले हजारों लोग रोज उसे बहता देखते रहे। सामान्य सोच यही थी कि नगरपालिका द्वारा ठीक किये जाने पर ही उसका पानी बहना बंद हो सकता है।

गायत्री परिवार के एक कार्यकर्त्ता ने इसे देखा। वह रुका और पानी का बहना रोकने के लिए प्रयास करने लगा। उसने देखा कि ऊपर से दबाव डालने से रिसाव रुक जाता है। पत्थर तो उस पर टिक नहीं सकता था, अतः उसे बाँधना ही एकमात्र उपाय था। उसने इधर-उधर देखा तो एक पॉलीथीन पड़ी दिखाई दी। उसने उसकी रस्सी बनायी और जैसे-तैसे नल को बाँधकर नल से पानी बहना रोक दिया।

मैं इसे देख रहा था। मेरे मन में आया कि इसका लाभ लेने वालों में से अभी थोड़ी देर में कोई व्यक्ति आयेगा और इसे खोल देगा, नल फिर बहने लगेगा, कार्यकर्त्ता की मेहनत निरर्थक चली जायेगी।

दूसरे दिन प्रातः भ्रमण के समय मैंने देखा कि ऐसा नहीं हुआ, बल्कि किसी व्यक्ति ने एक कपड़े की चीर से उसे और अच्छी तरह बाँध दिया है। लोग उससे पानी लेने आते रहे, लेकिन चीर को ढीला करते, पानी लेते और फिर उसे उसी तरह बाँधकर ही आगे बढ़ते थे।

मैं अगले दिन वहाँ से फिर गुजरा तो देखा कि अब वह नल ठीक हो गया था। शायद आसपास के किसी आश्रमवासी ने इसे संज्ञान में लेते हुए उसका वॉशर ठीक कर दिया था।

पूरी घटना को देखा-समझा तो यही समझ में आया कि समाज को सुधार और सृजन की दिशा में सार्थक पहल करने वाले अग्रदूतों की आवश्यकता है। साहसी कदमों का अनुसरण करने वाले लोग मिलते चले जाते हैं।

वाराणसी शाखा द्वारा किये गये बाढ़ राहत कार्य

नाव से जाकर राहत सामग्री बाँटते गायत्री परिवार के परिजन

वाराणसी (उत्तर प्रदेश) : इस वर्ष वाराणसी में आयी बाढ़ के समय गायत्री परिवार के परिजनों ने बाढ़ पीड़ितों की भरपूर सहायता की। 24 अगस्त को सेवाभावी, उत्साही कार्यकर्त्ताओं की टोली नावों में भोजन पैकेट, पानी के पैकेट, दूध, मोमबत्ती, माचिस, बिस्कुट, कपड़े जैसी दैनिक जरूरतों की वस्तुओं को लेकर निकली। गोयनका विद्यालय अस्सी, नगवा, गंगोत्री विहार कॉलोनी, शिवपुरी क्षेत्र, संकट मोचन क्षेत्र आदि जल में डूबे क्षेत्रों में घर-घर जाकर यह सामग्री वितरित की। इस सेवाकार्य को सफल बनाने में सर्वश्री राधेश्याम श्रीवास्तव, राजेन्द्र तिवारी, भगवान सिंह, आर.के. पाठक, वीरेन्द्र सिंह, राकेश पाण्डेय, ओम कुमार सिंह, अरुणेश देशमुख, पारसनाथ तिवारी, रविकान्त पाण्डेय, मैथिलीशरण, श्रीमती किरण श्रीवास्तव, श्रीमती हीरावती सिंह, श्रीमती इंदू पाठक आदि ने प्रमुख योगदान दिया।

पर्यावरण संरक्षण और जैविक कृषि का एक सफल प्रयोग

पशु समाधि खाद से लहलहा रही हैं फसलें

बांगरोद, रतलाम (मध्य प्रदेश)

श्रीराम गोशाला बांगरोद ने मृत गोवंश की खाद बनाकर उनके कारण होने वाले प्रदूषण का अत्यंत उपयोगी और लाभकारी समाधान प्रस्तुत किया है। बांगरोद और आसपास की गोशालाओं एवं गाँवों में मरने वाले गोवंश एवं अन्य पशुओं को लोग इस गोशाला को दे जाते हैं। यहाँ उन्हें खाद बनाने के उद्देश्य से समाधि दी जाती है। यह खाद रासायनिक खाद की अपेक्षा कहीं ज्यादा उर्वरक होती है, जो जमीन को भी खराब नहीं करती।

श्रीराम गोशाला में गौसेवा के साथ गोवंश को समाधि देने का प्रयोग सात गाँवों के 45 युवकों के सहयोग से 'श्रीराम गौमुक्ति धाम' की स्थापना कर हुआ। इसमें 30 गोशालाएँ अपने मृत गोवंश लेकर आती हैं। यह कार्य 2009 से आरंभ हुआ। अब तक 655 गोवंश को समाधि दी जा चुकी है, जिनमें से 45 समाधि की खाद का उपयोग किया गया है।

सफल रहे हैं प्रयोग

पशु समाधि खाद का उपयोग रतलाम और आसपास के किसान कर रहे हैं। लगभग 100 किसानों द्वारा 500 एकड़ भूमि में इसका सफल प्रयोग किया जा रहा है। खेती में गैंहूँ, चना, मक्का, बाजरा, ज्वार आदि की फसलों और उद्यानिकी में आम, आँवला, अमरूद, कटहल; सब्जियों में मिर्च, टमाटर, गोभी, लहसुन, आलू, खीरा आदि की खेती में प्रयोग किया जा चुका है। किसानों को रासायनिक खाद का बेहतर जैविक विकल्प मिला है। श्रीराम गोशाला द्वारा इसे बायो पोषक खाद के नाम से न्यूनतम शुल्क पर उपलब्ध कराया जा रहा है।

श्रीराम गोशाला में पंचायत की गोचर भूमि पर श्रीराम गौ मुक्तिधाम की स्थापना गायत्री परिवार रतलाम और प्रस्फुटन समिति के सहयोग से हुई। वहाँ बनाये गये श्रीराम स्मृति उपवन में वर्तमान में 7000 वृक्ष लगाये गये हैं।

बायो पोषक तत्वों से भरपूर है पशु समाधि खाद

2 फरवरी 2012 को इसमें पाये जाने वाले पोषक तत्त्वों का परीक्षण किया गया। इस खाद में नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, कैल्शियम, सोडियम क्लोराइड, मैग्नीशियम, पोटाश, कॉपर, जिंक, क्रिटीनान के साथ यूरिक एसिड पाये जाते हैं, जो भूमि को उर्वरक बनाते हैं।

कैंसर के मरीजों और वृद्धाश्रम में रहने वालों को निःशुल्क रक्त उपलब्ध कराता है गायत्री परिवार

- **28वें शिविर में हुआ 139 यूनिट रक्तदान**

टाटानगर (झारखंड)

21 अगस्त को नवयुग दल युवा प्रकोष्ठ एवं कालिन्दी कल्याण समिति ने मिलकर टाटानगर के टुइला डुंगरी, शीतला मंदिर में रक्तदान शिविर आयोजित किया। यह नवयुग दल युवा प्रकोष्ठ द्वारा आयोजित रक्तदान शिविर शृंखला का 28वाँ शिविर था। इसमें कुल 139 यूनिट रक्त संग्रह हुआ।

टाटानगर में चल रहा रक्तदान शिविर

यह शिविर प्रति वर्ष आयोजित होता है और अनुदान स्वरूप मेहरबाई कैन्सर अस्पताल को 50 कूपन तथा वृद्धाश्रम को 25 कूपन उपलब्ध कराए जाते हैं जिसे जरूरतमन्दों को निःशुल्क प्रदान किया जाता है।

शिविर का शुभारम्भ करते हुए अतिथिगण सर्वश्री खेमलाल साहू, राजू गिरि, मिथिलेश यादव, मंगल कालिन्दी ने गायत्री परिवार के आयोजकों, सहयोगियों एवं रक्त दानदाताओं की उदारता व सेवा भावनाओं की प्रशंसा की।

रक्तदान के लिए बढ़ती जागरूकता

- **166 यूनिट रक्तदान हुआ**
- **जनवरी-16 में भी आयोजित किया था शिविर, हुआ था 202 यूनिट रक्तदान**

नया हरसूद, खंडवा (म.प्र.)

27 अगस्त को गायत्री परिवार हरसूद शाखा द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इसमें कुल 12 महिलाओं एवं 154 पुरुषों ने रक्तदान किया। नगर की नौजवान मोहर्रम कमेटी के बैनर तले बहुत से मुस्लिम भाईयों ने भी गायत्री परिवार के रक्तदान शिविर में भाग लिया और रक्तदान किया। रक्त संग्रह के लिए आयी ब्लड बैंक इंदौर एमवायएच की टीम ने रक्तदान के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ाने के गायत्री परिवार के प्रयासों की खूब सराहना की। उन्होंने शिविर आयोजकों को सम्मानित भी किया।

शिविर का शुभारंभ मध्य जोन प्रभारी शांतिकुंज प्रतिनिधि श्री विष्णु पंड्या द्वारा गुरुदेव, माताजी एवं गायत्री माता की प्रतिमाओं के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं देवपूजन के साथ हुआ।

अनाथ बच्चों व बुजुर्गों में नये वस्त्र बाँटे

- **3 लाख रुपये की सामग्री बाँटी**
- **416 लोग लाभान्वित हुए**

कालीकट (केरल)

गायत्री परिवार कालीकट ने श्रावणी पर्व पर विशेष कार्यक्रम आयोजित कर अनाथालय के बच्चों एवं वृद्धाश्रम में रहने वाले बुजुर्गों के बीच खुशियाँ बाँटीं। कार्यक्रम वेल्लिमधुकुन्न ओल्ड ऐज होम में हुआ। कालीकट के कलेक्टर श्री प्रशांत नायर, डिप्टी मेयर श्रीमती मीरा धर्शक तथा गायत्री परिवार केरल के संयोजक श्री एम.टी. विश्वनाथन ने 416 अनाथ बच्चों और बुजुर्गों में 3 लाख रुपये की वस्त्र आदि सामग्री वितरित की।

यह आयोजन श्री गोपाल सिंह राजपुरोहित व कालीकट के महिला मण्डल की बहिनों ने किया। हिन्दू, मुस्लिम और क्रिश्चियन धर्म के लोग बिना किसी भेदभाव के लाभान्वित हुए। गायत्री मंत्र एवं महामृत्युंजय मंत्र के सामूहिक उच्चारण के साथ उनके बेहतर स्वास्थ्य एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना की गयी। कलेक्टर महोदय ने युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा जी के विचार और गायत्री परिवार की गतिविधियों की खूब-खूब प्रशंसा करते हुए उनका लाभ लेने का आह्वान लाभार्थियों से किया। सभी में मलयालम भाषा में 'हारिये न हिम्मत' पुस्तक वितरित की गयी।

प्रज्ञा अभियान
1 अक्टूबर 2016

गाँव के गरीब बच्चों की तकदीर बदल रहा है मालवीय चाइल्ड वेलफेअर सेण्टर

यह 'दिया' बनारस की एक शाखा है, जिससे जुड़े बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के 60 विद्यार्थी और शिक्षकों का समूह सीरी गोवर्धनपुर और उसके आसपास के गाँव के बच्चों की शिक्षा, गरीबी, बीमारी, बेरोजगारी जैसी समस्याओं को दूर करने में जुटा है

बनारस (उत्तर प्रदेश)

युग निर्माण शब्दों से ही संभव नहीं, उसके लिए हृदय में सेवा की भावना, मन में उमंग और साहसी कदमों की आवश्यकता होती है। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के एक विद्यार्थी कौशल मौर्य ने अपनी इन्हीं विभूतियों से दिया का वह प्रकाश फैलाया जिससे गरीबों की बस्ती जगमगा उठी। इतना ही नहीं उनके सेवा कार्यों में वर्ष-दर-वर्ष विद्यार्थी जुड़ते गये, सेवा के क्षेत्र बढ़ते गये और अब तो बीएचयू के आचार्यगण भी इस कार्य में जुड़ते जा रहे हैं।

एक युवा की संवेदना से उभरा संगठन मालवीय चाइल्ड वेलफेअर सेण्टर

कौशल मौर्य बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में प्रथम वर्ष का छात्र था और दिया, बनारस का सदस्य भी। मन में गुरुदेव की अपेक्षाओं पर खरे उतरते हुए मानवता की सेवा करने की हूक उठी। कुछ अपने जैसे सहृदय साथी चुने और आसपास के गाँवों का सर्वेक्षण किया। बीएचयू के पास के ही एक दलित बहुल गाँव सीरी गोवर्धनपुर को चुना और उस गाँव के लोगों के पिछड़ेपन और बदहाली को दूर करने में जुट गये। कौशल बीएचयू में तीन वर्ष रहा और इन तीन वर्षों में पूरे गाँव में अशिक्षा, गरीबी, बेरोजगारी, बीमारी को दूर करने के लिए एक सशक्त आन्दोलन खड़ा कर दिया। एक ऐसा सुव्यवस्थित तंत्र वहाँ गठित कर दिया, जो कौशल के स्नातक होने के बाद वहाँ से अपने गृह नगर बनबसा, जिला चंपावत (उत्तर प्रदेश) लौट आने के बाद भी बड़े सुव्यवस्थित ढंग से कार्य कर रहा है।

सीरी गोवर्धनपुर गाँव के लोगों के लिए कौशल ने 'मालवीय चाइल्ड वेलफेअर सेण्टर' नाम से अपनी संस्था का गठन किया। अपने कुछ मित्रों के साथ सबसे पहले उन्होंने उस गाँव के गरीब बच्चों की बाल संस्कार शाला आरंभ की। यह संस्कार शाला प्रत्येक रविवार को लगती थी। तीन वर्षों में क्रमशः गाँववासियों में और बीएचयू के उनके सहपाठियों में उनके सेवाभाव के प्रति विश्वास और सम्मान बढ़ता ही गया। प्रथम वर्ष 5, द्वितीय वर्ष 18 और तृतीय वर्ष 30 छात्र इस कार्य के लिए नियमित रूप से सहयोग करने लगे। समय-समय पर विशेषज्ञों का भी सहयोग मिला। इस प्रकार लगभग 60 लोगों का दल सीरी गोवर्धनपुर के गरीबों की सेवा में सक्रिय है। www.malviy-achildwelfare.org नाम से संस्था की अपनी एक वेबसाइट है, जिन पर उनकी सारी गतिविधियों की विस्तार से जानकारी मिलती है।

सीरी गोवर्धनपुर में बच्चों को पढ़ाते मालवीय चाइल्ड केअर सेण्टर के सदस्य, बीएचयू के विद्यार्थी

बहुमुखी गतिविधियाँ

मालवीय चाइल्ड वेलफेअर नामक यह संस्था 4 से 17 वर्ष तक के ग्रामीण गरीब बच्चों के लिए नियमित कक्षाएँ चलाती है, उन्हें तरह-तरह की

- बाल संस्कार शालाएँ
- बच्चों की कोचिंग
- प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी
- कम्प्यूटर शिक्षा
- कुटीर उद्योगों का प्रशिक्षण
- स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन
- सरकारी योजनाओं की जानकारी
- यज्ञ, दीपयज्ञ, संस्कार

प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कराती है। गाँववासियों के स्वास्थ्य के लिए निःशुल्क स्वास्थ्य शिविरों का आयोजन और मरीजों का उपचार कराती है। गायत्री शक्तिपीठ के सहयोग से गरीब ग्रामीणों को लघु उद्योगों का प्रशिक्षण देती है। ग्राम पंचायत से मिलकर शासकीय योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ गाँववासियों को दिलाने के लिए प्रयत्नशील रहती है। शांतिकुंज के कार्यकर्त्ताओं के सहयोग से गाँव में यज्ञ, संस्कार, दीपयज्ञ आदि के कार्यक्रम कराती है।

इस संस्था ने हाल ही में ग्रामीण विद्यालय, महाविद्यालयों, नगरों के बड़े शैक्षिक संस्थानों से जोड़ने के लिए विशेष प्रयास आरंभ किया है। इसके अंतर्गत ग्रामीण विद्यालय, महाविद्यालयों में वर्कशॉप आयोजित की जाती हैं और उनमें प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों के शिक्षक, अधिवक्ता, डॉक्टरों को आमंत्रित कर उन विद्यालयों के बच्चों के कौशल विकास, व्यक्तित्व परिष्कार के लिए सुव्यवस्थित कार्यक्रम तैयार कराये जाते हैं, उन्हें अपनाने संबंधी मार्गदर्शन दिया जाता है। गरीबी रेखा के नीचे के बच्चों को निःशुल्क कम्प्यूटर शिक्षा भी मालवीय चाइल्ड वेलफेअर संस्था द्वारा दी जाती है।

छात्रों के आपसी सहयोग से चलता है संगठन

यह कार्य व्यवस्थित तंत्र द्वारा निःस्वार्थ भाव से चलाया जाता है। आरंभ में संस्था से जुड़े विद्यार्थियों ने अपने जेब खर्च से ही विभिन्न कार्यों को गति दी। उन्होंने बीएचयू के होस्टेल में रहने वाले बच्चों से इस पुनीत कार्य के लिए 10-10 रुपये चंदा इकट्ठा किया। क्रमशः लोगों की श्रद्धा और विश्वास इस कार्य के प्रति बढ़ रहा है। इसीलिए बीएचयू के सहयोगी छात्रों की संख्या बढ़ती जा रही है। अब शिक्षकगण भी सहयोग करने लगे हैं। वे अपना समय, धन, साधन सब इस पुनीत कार्य में लगाते हैं। गायत्री शक्तिपीठ एवं स्थानीय दिया के सदस्यों का भी सहयोग मिलता है। यही कारण है कि स्नातक होकर बनबसा लौट जाने के बावजूद भी कौशल मौर्य नीरज, सिद्धार्थ आदि की टीम के साथ अपनी इस योजना का कुशलतापूर्वक संचालन कर रहे हैं। पीड़ित मानवता के साथ समर्थों की संवेदना जगाने में भी इस युवा अभियान ने शानदार सफलता पायी है।

वनवासी क्षेत्र जोबट में चल रही हैं 20 बाल संस्कार शालाएँ

जोबट में चल रही एक बाल संस्कार शाला

- श्रीमती मधुबाला शर्मा और उनकी सहयोगी 36 बहिनें कर रही हैं संचालन

जोबट, अलीराजपुर (म.प्र.)

महिला मण्डल जोबट ने पिछले डेढ़ वर्ष में अपने क्षेत्र में बाल संस्कार शालाओं का एक विशाल तंत्र खड़ा कर दिया है। इन दिनों वहाँ 20 बाल संस्कार शालाएँ चल रही हैं, जो बहुत लोकप्रिय हैं।

बाल निर्माण अभियान की सूत्रधार हैं शासकीय शाला की वरिष्ठ अध्यापिका श्रीमती मधुबाला शर्मा। उन्होंने दिसम्बर 2014 में शांतिकुंज में बाल संस्कार शाला संचालन का प्रशिक्षण लिया। इसे व्यक्तित्व निर्माण का एक शानदार प्रयोग अनुभव करते हुए उन्होंने एक नहीं, बाल संस्कार शालाओं का पूरा तंत्र विनिर्मित कर दिया। अपनी सहयोगी 36 बहिनों को इस कार्य के लिए प्रशिक्षित किया, जो इस समय सभी बाल संस्कार शालाओं का संचालन कर रही हैं। ये बाल संस्कार शालाएँ विभिन्न आश्रमों, छात्रावासों आदि में अवकाश के दिनों में चलायी जाती हैं।

बोरी, सेमलखेड़ी, उदयगढ, खट्टाली एवं जोबट में ये संस्कार शालाएँ चलायी जा रही हैं। इनके संचालन में श्रीमती सीमा सोनी, जिग्ना सोनी, सीमा जोशी, गंगा पाटीदार, टीना खत्री, मोना चतुर्वेदी, माधुरी यादव, सुनीता सोनी, हेमलता राठौड़, सुनिता वाणी, छाया जोशी, आरती राठौड, मोनिषा सोनी, डिम्पल सोनी, जाग्रती सोनी, टीना सोनी, बोरी में ममता राठौड़ वन्दना, सीमा पटेल, जमना चौहान, खट्टाली में भाविका पोरवाल, उर्मिला पंवार, उदयगढ़ में आशा गेहलोद, कोकिला चौहान की सहभागिता है।

विद्यालयों में सामूहिक जन्मदिवस एवं वृक्षारोपण अभियान

ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा इकाई, ग्वालियर ने विद्यालयों में सामूहिक जन्म दिवसोत्सव, देवस्थापना एवं वृक्षारोपण के कार्यक्रमों की शृंखला आरंभ की है। अगस्त 2016 में पेसिफिक इंटरनेशनल पब्लिक स्कूल, सिकन्दरा कम्पू में यह कार्यक्रम आयोजित हुआ। वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री रामस्वरूप अग्रवाल ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए बच्चों को दैनिक जीवन में कई अच्छी-अच्छी आदतें अपनाने की प्रेरणा दी। उन्हें गायत्री परिवार की गतिविधियों की जानकारी दी।

डॉ. पी.डी. गुप्ता विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए

शांतिकुंज प्रतिनिधि डॉ. पी.डी. गुप्ता ने भारतीय संस्कृति की महत्ता बताते हुए बच्चों से भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा, संस्कृति मण्डल, जन्मदिवस अभियान, नशामुक्ति, वृक्षारोपण जैसी योजनाओं से जुड़ने का आह्वान किया।

विद्यालयों में बड़े प्रभावशाली सिद्ध हो रहे हैं पुस्तक मेले

करनाल (हरियाणा)

करनाल शाखा के कई वरिष्ठ परिजन-सर्वश्री सतीश गौतम, डॉ. महेन्द्र सिंह, हंसराज चावला, मा. बलवीर सिंह, प्रवीण भारद्वाज, श्रीमती सीताजी आदि की टोली ने जुलाई-अगस्त माह में जिले के पाँच विद्यालयों में पुस्तक मेले लगाये। लगभग 50 हजार रुपये का साहित्य इनमें बच्चों ने खरीदा।

पुस्तक मेले बहुत ही लोकप्रिय और सफल रहे। गुरुदेव के साहित्य से शिक्षकगण बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने यह कहते हुए स्वयं बच्चों को यह साहित्य खरीदने के लिए प्रेरित किया कि इन विचारों से ही विद्यार्थियों और देश का भविष्य उज्ज्वल होगा। शिक्षकों ने भी साहित्य खरीदा, सभी विद्यालयों के पुस्तकालयों के लिए भी खरीदा गया।

ये पुस्तक मेले शहीद उधमसिंह स्कूल इंद्री, स्वर्ण विद्या पब्लिक स्कूल इंद्री, सौरभ शिक्षा निकेतन ब्याना, गीता हाईस्कूल धीड, गीता निकेतन व.मा. विद्यालय चोरमि में आयोजित हुए। विद्यालयों ने इन पुस्तक मेलों में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, भारत विकास परिषद आदि संस्थाओं और स्थानीय पंच-सरपंचों को भी आमंत्रित किया था।

करनाल के एक विद्यालय में युग साहित्य देखते शिक्षक-बच्चे

चेतना इ. कॉलेज में आयोजित हुआ युवा चेतना शिविर

लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

श्री अरुण श्रीवास्तव की टोली ने चेतना पब्लिक इ.कॉलेज एकता नगर, बालागंज, लखनऊ में एक दिवसीय युवा चेतना जागरण शिविर आयोजित करते हुए विद्यालय के 59 छात्र-छात्राओं में सामाजिक उत्कर्ष की गतिविधियों में सक्रिय सहयोग करने की उमंग जगाई। विद्यार्थी जीवन के लिए उपयोगी विषयों पर 40-40 मिनट की आठ कक्षाओं में उन्हें उत्कृष्टता के सूत्र दिये गये। इसके साथ ही उन्हें बाल संस्कार शाला, व्यसनमुक्ति, वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान, आदर्श ग्राम योजना जैसे सामाजिक हित के आन्दोलनों में सक्रिय भागीदारी की प्रेरणा दी गयी, संकल्प कराये गये। शिविर संचालन में डॉ. एस.एन. सचान, श्रीमती क्षमा गुप्ता, कु. नेहा, डॉ. एस.पी. चौरसिया, श्रीमती अर्चना शर्मा का योगदान रहा।

धरती माँ को हरी चूनर ओढ़ाने के संकल्प के साथ गतिशील है वृक्षगंगा अभियान

पौधों को बाँधी पहली राखी

- सशस्त्र सीमा बल के जवानों ने भी बँधवाई राखी, किया वृक्षारोपण

लखीमपुर खीरी (उ.प्र.)
गायत्री परिवार के युवा प्रकोष्ठ लखीमपुर-खीरी ने श्रावणी-रक्षाबंधन पर्व पर लोगों में पर्यावरण के प्रति प्रेम जगाने के लिए लीक से हटकर प्रयास किये। गायत्री शक्तिपीठ पर आयोजित श्रावणी-रक्षाबंधन के कार्यक्रम के अवसर पर बहिनों ने पहली राखी पौधों को बाँधी और फिर अपने भाइयों को राखी बाँधी। इस क्रम के उपरांत सभी ने मिलजुलकर पौधों का भावभरा पूजन किया और फिर उन्हें उपयुक्त जगह पर जाकर रोपा, उनकी सुरक्षा की व्यवस्था की। हरिशंकर और कुलदीप वर्मा ने पूजन संपन्न करवाया।

गायत्री परिवार के भाई-बहिन सशस्त्र सीमा बल के रक्षाबंधन कार्यक्रम में पहुँचे। उन्होंने प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विद्यालय की बहनों के साथ मिलकर जवानों को राखी बाँधी। अपने घर-परिवार से दूर रहकर समाज की सेवा-सुरक्षा कर रहे जवानों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त की। ओ सपूतों! भारत की तकदीर बना दो, हम ऋषियों की संतान हैं-दुनियाँ को दिखा दो... प्रस्तुत करते हुए उनका उत्साहवर्धन किया। समारोह में उप कमाण्डेंट आशीष पाण्डेय, असिस्टेंट कमाण्डेंट नारायण राम, सहायक कमाण्डेंट नैन्शी, उपनिरीक्षक आर के पाठक तथा सहायक उपनिरीक्षक प्रकाश चन्द ने भाग लिया। सभी ने मिलकर श्रावणी के उपलक्ष्य में पूजित पौधों का रोपण किया।

इस कार्यक्रम में युवा प्रकोष्ठ के आनन्द शुक्ला, कुलदीप वर्मा, गरिमा मौर्य, सविता मौर्य, मानसी जायसवाल, गायत्री देवी, विद्या देवी, कुलदीप मौर्य, उत्कर्ष सिंह, शुभम वर्मा, वैशाली राजावत, पूर्णिमा, मृणाल मौर्य, आनंद चौधरी ने भाग लिया।

गायत्री शक्तिपीठ, खीरी लखीमपुर पर मनाया जा रहा रक्षाबंधन पर्व

2 एकड़ शासकीय भूमि पर रोपे 1100 पौधे

भूमि की फैंसिंग भी करायी

बलरामपुर (छत्तीसगढ़)
युवा प्रकोष्ठ शंकरगढ़ ने अपने वृक्षगंगा अभियान के अंतर्गत ग्राम जगिमा की खाली पड़ी दो एकड़ भूमि पर सामूहिक वृक्षारोपण अभियान चलाया। इसके अंतर्गत कुल 1100 पौधे रोपे गये। इसके लिए समाज का पूरा सहयोग मिला। आम, जामुन, नीम, पीपल जैसे पौधों की व्यवस्था स्थानीय स्तर पर लोगों ने की, वन विभाग ने सागौन आदि इमारती पेड़ों की पौध उपलब्ध करायीं। वरिष्ठ परिजन श्री बैजनाथ यादव के सहयोग से पूरे क्षेत्र की फैंसिंग की गयी। भविष्य में तहसील शंकरगढ़ से आने वाले मुख्य मार्ग के दोनों ओर वृक्षारोपण करने का संकल्प लिया गया।

जगह-जगह वृक्षारोपण की उमंग

मातर : जलते दीपों की साक्षी में वृक्षारोपण-पोषण का संकल्प लेते गाँव के युवक

मातर, खेड़ा (गुजरात) : खेड़ा जिला गायत्री परिवार और रामधुन मंडल नवागाम, मातर के प्रयासों से तहसील मातर के नवागाम नायका की पटेल वाड़ी में 28 अगस्त को वृक्षारोपण का अत्यंत आस्थावर्धक कार्यक्रम आयोजित हुआ। लगभग 70 युवकों ने ग्राम के प्रतिष्ठित लोगों की उपस्थिति में वृक्षारोपण किया। इससे पूर्व रोपित किये जाने वाले सभी पौधों का विधि-विधान के साथ पूजन, वंदन किया गया। धार्मिक ग्रंथों में आये वर्णन के आधार पर वृक्षों के प्रति आस्था जगाते हुए उनके पालन, संरक्षण के संकल्प दिलाये गये।

टाटानगर (झारखंड) : गायत्री परिवार, टाटानगर के नवयुगदल 29 अगस्त को विश्व विकास विद्यालय मिरूडीह, गम्हारिया में 101 वृक्ष की पौध लगायी। विद्यालय प्राचार्य एवं गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ताओं के साथ स्कूल के बच्चों ने भी बड़े उत्साह के साथ पौधे लगाये। कई बच्चों ने इन्हें नियमित रूप से पानी देने के संकल्प भी लिये।

अपनी महान संस्कृति के प्रति आस्था बढ़ाने और जिज्ञासा जगाने वाले शिक्षक-विद्यार्थी सम्मान समारोह

'शिक्षक भूषण' और 'संस्कृति प्रचारक' सम्मान से विभूषित हुए शिक्षक

राठ, हमीरपुर (उत्तर प्रदेश)
गायत्री शक्तिपीठ राठ पर 14 अगस्त को उपजोन स्तरीय शिक्षक गरिमा एवं संस्कृति प्रचारक शिविर आयोजित हुआ। शांतिकुंज से पहुँचे डॉ. आर.पी. कर्मयोगी, शिक्षा विभागाध्यक्ष देसंविवि., श्री पी.डी. गुप्ता, भा.सं.ज्ञा.प. प्रभारी एवं श्री राजेश मिश्रा की टोली के प्रेरक उद्बोधनों के बीच यह कार्यक्रम शानदार सफलता के साथ सम्पन्न हुआ।

इस शिविर में जनपद में पिछले 15 वर्षों से भासंज्ञाप. के सफलतापूर्वक संचालन में सहयोगी 50 शिक्षकों एवं संस्था प्रधानों को शिक्षक भूषण सम्मान से तथा 20 महिलाओं को संस्कृति प्रचारक एवं संस्कृति पुरोधा सम्मान से सम्मानित किया गया। इस उपलक्ष्य में उन्हें अंगवस्त्र, श्रीफल, प्रमाण पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान किये गये।

सम्मान समारोह के विशिष्ट अतिथि डॉ. कैलाश विश्वकर्मा-विभागाध्यक्ष भौतिकी, ब्रह्मानन्द महाविद्यालय तथा राष्ट्रीय संयोजक वैदिक गणित शिक्षा एवं संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली ने शिक्षकों को उनकी गौरव-गरिमा तथा युगधर्म का बोध कराया। डॉ. एस.एन. परिहार, प्रधानाचार्य चित्रगुप्त इ.कॉलेज, राठ ने शिक्षा में नैतिक मूल्यों के समावेश के लिए युवा शिक्षकों के चरित्र निर्माण एवं नैतिक विकास पर विशेष बल दिया।

गायत्री परिवार की ओर से मेजर चंद्रशेखर मिश्र, श्री राजेन्द्र द्विवेदी झाँसी आदि अनेक कार्यकर्त्ताओं ने विविध विषयों पर मार्गदर्शन किया। इस शिविर में ललितपुर, झाँसी, महोबा, जालौन एवं हमीरपुर जनपद के वरिष्ठ प्रतिनिधि उपस्थित थे।

देव संस्कृति को जानने-अपनाने की उमंग जगा रहे हैं भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के पुरस्कार वितरण समारोह

बायें-मुजफ्फर नगर और दायें-बिलासपुर में सम्मानित हुए छात्र-छात्राओं का समूह

सत्प्रवृत्तियों का विस्तार ही सच्ची ज्ञान साधना

मुजफ्फरनगर (उत्तर प्रदेश)
पाल धर्मशाला आनन्दपुरी, मुजफ्फरनगर में 12 अगस्त को भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का पुरस्कार वितरण समारोह नौ कुण्डीय गायत्री यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। सम्मानित हो रहे विद्यार्थी, शिक्षक, बच्चों के अभिभावक एवं गणमान्यों ने इसमें भाग लिया। श्री सोमपाल एवं सोहन वीरी देवी ने यज्ञ संचालन करते हुए कहा कि जीवन में अच्छी आदतों और समाज में श्रेष्ठ प्रवृत्तियों का विस्तार ही सच्ची ज्ञान साधना है। आज समाज में जो दुराचार, अत्याचार, हताशा, आतंक का साम्राज्य छाया है वस्तुतः वह अज्ञानजनित ही है। मनुष्य चाहे कितनी भी बड़ी डिग्री हासिल कर ले, यदि सदाचारी नहीं है तो वह अज्ञानी ही है।

मुख्य अतिथि विधायक श्री कपिल अग्रवाल, जनसेवक श्री जगदीश पंचाल, अनिता राज जिंदल ने वरीयता प्राप्त विद्यार्थियों को प्रमाण पत्र, पदक, निर्धारित राशि, युग साहित्य भेंट कर सम्मानित किया।

हर विद्यालय में प्रथम रहे विद्यार्थी का भी सम्मान

करनाल (हरियाणा)
रामचरित मानस व.मा. विद्यालय करनाल में आयोजित करनाल जिले के भा.सं. ज्ञान परीक्षा पुरस्कार वितरण समारोह में एक नई पहल हुई। प्रत्येक कक्षा वर्ग में जिला स्तर पर वरीयता प्राप्त विद्यार्थियों को सम्मानित करने के साथ विद्यालय स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को भी कक्षावार सम्मानित किया गया। सभी विद्यालयों के प्रधानाचार्य एवं शिक्षकों ने इस पहल का प्रसन्नतापूर्वक स्वागत किया। सभी शिक्षकों को भी परम पूज्य गुरुदेव के वाङ्मय का एक-एक खंड भेंट किया गया।

कुमारी सुमेधा कटारिया आईएएस आयुक्त नगर निगम करनाल समारोह की मुख्य आतिथ्य थीं। उन्होंने विद्यार्थियों को प्रेरणा और प्रोत्साहन की दृष्टि से भा.सं. ज्ञान परीक्षा और इस कार्यक्रम को अद्वितीय बताया।

जिला संयोजक श्री सतीश गौतम ने समस्त सहयोगी प्रधानाचार्य, शिक्षक कार्यकर्त्ताओं के प्रति आभार ज्ञापन किया। जिले में भासंज्ञाप. को मिल रही सफलता और लोकप्रियता में सर्वश्री लखनलाल जी, डॉ. महेन्द्र जी, डॉ. कँवरपाल शर्मा, विजेन्द्र ठांडा, बलवीर पाल, राजेन्द्र शर्मा, जगदीश पोसवाल, जयभगवान उत्तम आदि का प्रमुख योगदान रहा है।

विधायक ने किया सम्मानित

बिलासपुर (हिमाचल प्रदेश)
बिलासपुर जिले का भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा पुरस्कार वितरण समारोह 21 अगस्त को गायत्री शक्तिपीठ पर सम्पन्न हुआ। स्थानीय विधायक श्री वम्बर ठाकुर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। जिला एवं तहसील स्तर पर वरीयता प्राप्त विद्यार्थियों और सहयोगी शिक्षकों को सम्मानित किया गया। सम्मानित होने वाले शिक्षकों में ब्रिगेडियर वी.एस. वर्मा, श्रीमती कृष्णा शर्मा, श्री सुरेन्द्र महाजन, श्री रमेश शर्मा प्रधानाचार्य शामिल थे। उल्लेखनीय है कि गतवर्ष बिलासपुर जिले के 10,000 विद्यार्थियों ने परीक्षा में भाग लिया था।

पुरस्कार वितरण समारोह से पूर्व 5 कुण्डीय यज्ञ किया गया, वरिष्ठ नागरिक सभा के अध्यक्ष श्री रतनलाल शर्मा, सेवा भारती मण्डी के प्रतिनिधि डॉ. देवेन्द्र ठाकुर आदि अतिथियों के अलावा शिक्षक, कार्यकर्त्ता, अभिभावकों और विद्यार्थियों ने भाग लिया। वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री ओंकार सिंह ठाकुर एवं श्री लेखराम शर्मा ने यज्ञ संचालन किया। श्री नानकराम भारद्वाज द्वारा आभार प्रदर्शन के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन पर भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा के सहयोगी आचार्यों के सम्मान के लिए आयोजित हुआ समारोह

मध्य प्रदेश के मंत्री श्री पारस जैन द्वारा सम्मानित हुए 150 शिक्षकगण

उज्जैन (मध्य प्रदेश)
गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन पर प्रदेश के ऊर्जा मंत्री श्री पारस जैन की मुख्य उपस्थिति में शिक्षक सम्मान समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर उन्होंने राष्ट्र निर्माता शिक्षकों की महती भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि बच्चे माता-पिता से अधिक अपने शिक्षकों की बात मानते हैं, अतः बच्चों के व्यक्तित्व विकास का नैतिक दायित्व गुरुजनों का ही होता है।

समारोह में जिले के 150 से अधिक प्राचार्य, प्रधानाचार्य, शिक्षकों का सम्मान किया गया।

शिक्षकों को सम्मानित करते श्री पारस जैन, ऊर्जा मंत्री मध्य प्रदेश

सम्मान प्राप्त करने वाले शिक्षकों ने कहा कि गायत्री परिवार की शिक्षा योजनाओं में सहभागी होकर हमें शिक्षक होने का गौरव बोध होता है। इस अवसर पर उन्होंने अपने दायित्वों के कुशलतापूर्वक निर्वहन का आश्वासन भी दिया।

समारोह के मुख्य वक्ता डॉ. शशिकान्त शास्त्री प्राचार्य शासकीय पोलीटेक्नीक महा-विद्यालय ने भारतीय संस्कृति के अनुरूप बच्चों का व्यक्तित्व ढालने का आह्वान किया। अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में उपजोन समन्वयक पं. पुरूषोत्तम दुबे ने विद्यालयों में संस्कृति मण्डलों के गठन और बाल संस्कार शिविर के आयोजन का आह्वान किया। डॉ. मीनाक्षी गुप्ता ने व्यक्तित्व विकास में गायत्री महामंत्र की भूमिका पर प्रकाश डाला।

जिनमें सीखने की जिज्ञासा है, उनके लिए पग-पग पर शिक्षक मौजूद है।

नारी स्वावलम्बन के लिए चेतना ग्राम संस्थान की क्रांतिकारी पहल

जयपुर (राजस्थान)

श्रद्धेया शैलजीजी की प्रेरणा और आशीर्वाद लेकर जयपुर निवासी श्रीमती विभा अग्रवाल ने नारी सशक्तीकरण की दिशा में कदम बढ़ाये तो कमाल कर दिया। उनके द्वारा संचालित चेतना ग्राम संस्थान ने अब तक 17 स्वावलम्बन प्रशिक्षण शिविर लगाये, जिनसे गरीब, जरूरतमंद परिवारों की 1780 महिलाएँ लाभान्वित हुई हैं।

ये शिविर सांगानेर, शक्तिपीठ ब्रह्मपुरी, मानसरोवर, वैशाली नगर, घाट गेट, बसंत विहार, बनीपार्क, गाँधीनगर, मनोहरपुरा, जगतपुरा, गूजर की थड़ी, कठपुतली नगर, बिन्दायका आदि स्थानों पर लगाये गये। शिविर में शामिल होने वाली बहिनों की संख्या 25 से 98 तक रही। पिंजरापोल व बनीपार्क स्कूलों में भी शिविर लगाये, जिनमें क्रमशः 600 और 120 छात्राओं ने लाभ लिया। इनमें सिलाई, संगीत, संस्कार, स्वावलम्बन की शिक्षा दी गयी।

17 शिविर लगाये
1780 महिलाओं को दिया प्रशिक्षण
40 से अधिक उद्योग सिखाये गये
18 स्वयं सहायता समूह बने
180 महिलाओं को मिल रहा है रोजगार

प्रयास सार्थक सिद्ध हो रहे हैं। प्रशिक्षित बहिनों के 18 स्वयं सहायता समूह तैयार हो गये हैं, जिनके माध्यम से 180 बहिनों को रोजगार दिया जा रहा है। इन समूहों को सिलाई मशीनें दी गयी हैं। अधिकतर बहिनें गरीब हैं। वे सब एक फैक्टरी में सिलाई-कढ़ाई के अलावा गत्ते के बैग, मार्बल पेण्टिंग, राखी, थैली, पोटली, अचार, जैम आदि 40 प्रकार की वस्तुएँ बना रही हैं। उन्हें इसका मेहनताना दिया जाता है। श्रीमती चौधरी के मार्गदर्शन में काम कर रही सांगानेर के एक स्वयं सहायता समूह 'ऊर्जा' की 30 बहिनें हवन के छोटे किट तैयार करने में जुटी हैं। प्रशिक्षित बहिनों के माध्यम से पंजाब, जयपुर और मुम्बई के कई घरों में विभिन्न प्रकार के कुटीर उद्योग प्रारंभ हो गये हैं।

पिछले दिनों चेतना ग्राम संस्थान द्वारा उनके द्वारा निर्मित स्वयं सहायता समूहों द्वारा बनाये गये सामानों की प्रदर्शनी लगायी। लागों ने इन सामानों को खूब पसंद किया और खरीदा। इन सामानों की बिक्री से ही संस्थान की गतिविधियाँ आगे बढ़ती जा रही हैं। यहाँ साहित्य भी खूब बिका।

बाँयें-हवन के पैकेट तैयार करती बहिनें और दायें-अपने प्रमाण पत्रों के साथ प्रसन्नचित्त प्रशिक्षित बहिनें

चेतना ग्राम संस्थान के प्रयास बहुमुखी हैं। उन्होंने कच्ची बस्तियों में प्रौढ़ शिक्षा की कक्षाएँ चला रखी हैं। एक युवा टीम का गठन किया गया है, जिसके माध्यम से एक सेंटर में 300 बच्चों को शिक्षा, संस्कार देने व स्वावलम्बी बनाने का लक्ष्य रखा गया है। यह केन्द्र बच्चों के साथ-साथ उनके अभिभावकों को भी मिशन से जोड़ने का प्रयास करेगा, उन्हें रोजगार भी दिलायेगा।

श्रीमती विभा अग्रवाल अपने भामाशाही योगदान से मिशन को सींचने वाले जयपुर के सुपरिचित कार्यकर्त्ता श्री वीरेन्द्र अग्रवाल जी की पुत्रवधु हैं। श्रद्धेया जीजी से 30,000 महिलाओं को स्वावलम्बी बनाने की प्रेरणा और आशीर्वाद मिलने के बाद से उन्होंने अपने आप को पूरी तरह से इसी कार्य के लिए समर्पित कर दिया। जयपुर की अन्य वरिष्ठ बहिनों-जया, मीनाक्षी, गायत्री, स्वाती, सीता जी, पृथ्वी जी, श्रीमती चौधरी, श्रीमती चौहान आदि का उन्हें पूरा-पूरा सहयोग मिला। परिणाम स्वरूप वे अपने लक्ष्य की ओर तेजी से बढ़ रही हैं। 3000 बहिनें उनके स्वावलम्बन अभियान से जुड़ चुकी हैं।

नारी जागरण और बाल निर्माण के लिए

एक शिक्षिका की सराहनीय सेवाएँ

घुमका, राजनांदगाँव (छत्तीसगढ़)

शासकीय कन्या पू.मा. शाला घुमका में पदस्थ उच्च श्रेणी शिक्षिका श्रीमती शीला सोनी की मिशन के प्रति समर्पित भावनाओं ने अपने क्षेत्र में नारी जागरण अभियान का एक आदर्श प्रस्तुत किया है। उन्होंने बाल निर्माण और महिला जागरण दोनों ही क्षेत्रों में प्रशंसनीय कार्य किये हैं।

श्रीमती शीला सोनी पिछले कुछ माह में 10 हायर सेकण्ड्री स्कूलों में दो से तीन घंटे के नशामुक्ति से संबंधित उद्बोधन दे चुकी हैं। वे आसपास के गाँवों में 7 केन्द्रों पर बाल संस्कार शाला चला रही हैं।

ग्रीष्मावकाश के दिनों में श्रीमती सोनी ने चार दिवसीय कन्या कौशल शिविर का आयोजन किया था, जिसका 100 महिलाओं ने लाभ लिया। जन्मदिवस, दीपयज्ञ, देवस्थापना जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से 200 से अधिक महिलाओं को सुसंतति, परिवार निर्माण, तुलसी रोपण, बलिवैश्व, गायत्री उपासना, स्वच्छता जैसे कार्यक्रमों के लिए प्रेरित और संकल्पित कर चुकी हैं।

संस्कारवान संतान प्राप्ति के लिए

अस्पताल में कराया पुंसवन संस्कार

वडोदरा (गुजरात)

मानवीय आस्थाओं में अपार शक्ति होती है। इनकी रोग निवारण और श्रेष्ठ सृजन में अद्वितीय भूमिका होती है। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए देवपुष्प हॉस्पिटल, मांजलपुर, वडोदरा द्वारा प्रत्येक रविवार को गायत्री यज्ञ का आयोजन किया जाता है। इसी कड़ी में गर्भवती बहिनों का पुंसवन संस्कार कराने की परम्परा भी आरंभ कर दी गयी है।

स्त्री रोग विशेषज्ञ चिकित्सकों ने रूसी पत्रकार ओल्गा का संस्कार कराया

संस्कार कराते पत्रकार दम्पति

21 अगस्त को हॉस्पिटल में एक रूसी महिला पत्रकार 'ओल्गा' ने भी श्रेष्ठ संतति को जन्म देने की कामना और प्रार्थना के साथ श्रद्धापूर्वक पुंसवन संस्कार सम्पन्न कराया। यह संस्कार अस्पताल के महिला रोग विशेषज्ञ चिकित्सक डॉ. नीरज शाह एवं डॉ. राखी शाह ने स्वयं सम्पन्न कराया, उसका दर्शन बताया और तद्नुरूप ऋषि प्रणीत आहार, विहार, विचार संबंधी सूत्रों को व्यावहारिक जीवन में अपनाने के संकल्प कराये।

पर्वों के माध्यम से दम्पतियों में युग निर्माणी आस्था जगायी

अंबिकापुर (छत्तीसगढ़)

7 अगस्त, नागपंचमी के पावन अवसर पर गायत्री शक्तिपीठ अंबिकापुर में सामूहिक रुद्राभिषेक का कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम दम्पति जोड़ो अभियान के अंतर्गत सम्पन्न हुआ। बारह ज्योतिर्लिंग स्थापित किये गये। प्रत्येक पर 4-5 दम्पतियों ने एक साथ रुद्राभिषेक किया। इसके माध्यम से उपस्थित दम्पतियों को अपने जीवन में शिव जैसी सादगी, उदारता, सबके कल्याण की भावना तथा पार्वती जैसा तपस्वी, समर्पित जीवन जीते हुए अपने परिवार में संस्कारों के सतत अभिवर्धन की प्रेरणा दी गयी।

अंबिकापुर में रुद्राभिषेक के साथ युगधर्म की प्रेरणा पाते दम्पति

आज के युगधर्म को निभाने के लिए भी सभी को प्रेरित किया गया। महाकाल स्वरूप परम पूज्य गुरुदेव-परम वंदनीया माताजी के जीवन का अनुसरण करने का आग्रह उनसे किया गया। विविध रचनात्मक अभियानों की जानकारी दी गयी। पर्यावरण संरक्षण को विशेष महत्त्व देते हुए सभी दम्पतियों को प्रसाद रूप में एक फलदार वृक्ष की पौध और युग साहित्य प्रदान किया गया। सर्वश्री एस.एल. सोनी, एस.एल. रौतिया, भैयालाल राठौर आदि कार्यक्रम में मुख्य रूप से शामिल रहे।

दिवंगत हुई देवात्माओं को भावभरी श्रद्धांजलि

श्री त्रिलोकीनाथ बित्थर, दिल्ली

सन् 1956 से ही परम पूज्य गुरुदेव के प्रति समर्पित होकर मिशन की सेवा कर रहे दिल्ली के प्राणवान कार्यकर्त्ता श्री त्रिलोकीनाथ बित्थर का 5 सितम्बर को देहावसान हो गया। वे 98 वर्ष के थे। शांतिकुंज में प्रथम बुक स्टॉल आरंभ करते समय स्व. श्री त्रिलोकीनाथ जी ने अपनी सेवाएँ प्रदान की थीं।

स्व. श्री त्रिलोकीनाथ जी दिल्ली में मिशन की नींव रखने वाले प्रमुख कार्यकर्त्ताओं में से थे। पूरी दिल्ली में उन्होंने मिशन का प्रकाश फैलाया, हजारों लोगों को गायत्री साधना के लिए प्रेरित-प्रोत्साहित कर उनका जीवन बदला और सैकड़ों कार्यकर्त्ता खड़े किये। उनके पुत्र श्री राजेन्द्र बित्थर, पुत्रवधु श्रीमती पुष्पा (गुड्डी) एवं पूरा परिवार मिशन की सेवा में समर्पित है।

श्री रामनरेश वानप्रस्थी, बेगूसराय (बिहार)

जिला बेगूसराय के वरिष्ठ परिजन श्री रामनरेश वानप्रस्थी का 16 अगस्त को 70 वर्ष की अवस्था में स्वर्गवास हो गया। सन् 1985 से मिशन से जुड़ने के बाद से ही वह एक सच्चे युग निर्माणी के दायित्वों को बखूबी निभाते हुए बेगूसराय के अलावा शांतिकुंज, पटना, मुजफ्फरपुर के लिए समयदान करते रहे थे।

श्रीमती कांता भारद्वाज, धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश)

गायत्री शक्तिपीठ देहरा, के संस्थापकों में प्रमुख श्रीमती कांता भारद्वाज का 28 मई को देहावसान हो गया। शक्तिपीठ निर्माण के साथ इसके माध्यम से विचार क्रांति अभियान के विस्तार के लिए वे पूरे तन, मन, धन से समर्पित रहीं। वे 1977 से ही मिशन की सेवा कर रही थीं।

श्री रामप्रकाश शर्मा, बिलासपुर (हि. प्र.)

गायत्री परिवार ट्रस्ट बिलासपुर से जुड़े वरिष्ठ कार्यकर्त्ता एवं सेवा निवृत्त प्रधानाचार्य श्री रामप्रकाश शर्मा का देहावसान हो गया। गुरुदेव द्वारा बताये जीवन साधना के सूत्रों को अपने विद्यार्थियों के जीवन में उतारना, युवा उत्कर्ष के लिए प्रयत्नशील रहना उनका मुख्य लक्ष्य था।

उपरोक्त एवं इन्हीं दिनों दिवंगत हुई सभी देवात्माओं को आत्मिक शांति, सद्गति प्राप्त हो, ऐसी शांतिकुंज तथा समस्त गायत्री परिवार परम पूज्य गुरुदेव, वंदनीया माताजी की सूक्ष्म सत्ता से प्रार्थना करता है।

रियो ओलंपिक में खेलने वाली बेटी का सम्मान

राजनांदगाँव (छत्तीसगढ़)

रियो ओलंपिक में भारत का प्रतिनिधित्व करने वाली खिलाड़ी सुश्री रेणुका यादव का शक्तिपीठ पर भावभरा स्वागत अभिनंदन किया गया। शक्तिपीठ पहुँचने पर सुश्री रेणुका ने बड़ी श्रद्धा के साथ गायत्री माता के दर्शन किये। वहाँ सर्वश्री नंदकिशोर सुरजन, हरीश गाँधी, जुगल किशोर लड्ढा, संजय लड्ढा, सेवाराम, सुरेश, धर्मेन्द्र, ओमप्रकाश आदि ने उन्हें गायत्री मंत्र चादर उढ़ाकर, माल्यार्पण कर एवं ग्यारह हजार रुपये भेंटकर सम्मानित किया।

गायत्री शक्तिपीठ राजनांदगाँव पर सुश्री रेणुका यादव को सम्मानित करते परिजन

26 घरों में सामूहिक यज्ञ का प्रशंसनीय प्रयोग

इंदौर (मध्य प्रदेश)

गायत्री शक्तिपीठ केशरबाग, इंदौर द्वारा चलाये जा रहे सामूहिक यज्ञ अभियान के अन्तर्गत 28 अगस्त को सुदामा नगर के 26 घरों में एक साथ एक ही समय पर गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराये गये। इन यज्ञों का संचालन शक्तिपीठ के वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने किया। भारतीय संस्कृति के निर्माता, यज्ञ पिता गायत्री माता को अपनाने और अपने घर-परिवार को स्वर्ग बनाने का संदेश दिया।

कार्यक्रम बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न हुए। आरंभ में सुदामा नगर में जनजागरण रैली निकाली गयी। इसके माध्यम से लोगों को इन यज्ञों में भागीदारी का आमंत्रण दिया गया। बड़ी संख्या में श्रद्धालु आये, यज्ञ किया, युग संदेश सुना। सभी घरों में देव स्थापना की गयी और युग साहित्य की स्थापना की गयी।

श्री सजल तिवारी के अनुसार वं.माताजी के महाप्रयाण दिवस-20 सितम्बर पर इंदौर में कई स्थानों पर सामूहिक स्वच्छता के कार्यक्रमों का आयोजन किये जाने की जानकारी दी गयी और उसमें भाग लेकर समाज को स्वच्छ बनाने का आह्वान श्रद्धालुओं से किया गया।

भक्ति, विवेक, ज्ञान का अनुदान दे गये गणपति बाप्पा

उत्कर्ष-2016

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में 10 दिवसीय गणेशोत्सव 'उत्कर्ष-2016' बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। निःसंदेह समारोह में व्यक्तित्व के उन्मुखीकरण की अनेक प्रेरणाएँ थीं। अलग-अलग विभाग के विद्यार्थियों ने अलग-अलग दिन की व्यवस्थाएँ सँभालीं। गणेशोत्सव मनाने की प्रचलित परम्पराओं से हटकर उन्होंने इसे अपने-अपने ढंग से प्रेरणादायी, ज्ञानवर्धक बनाने के प्रयास किये। विद्यार्थियों को अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन का अवसर मिला।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में सजा गणपति बप्पा का दरबार

आदरणीया शैल जीजी, कुलाधिपति आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, कुलपति श्री शरद पारधी जी, प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय जी सहित समस्त आचार्यगण ने उनका उत्साहवर्धन किया, नयी दिशा-नयी प्रेरणाएँ दीं।

विद्यार्थियों में संस्कृति के आदर्शों को दर्शाने की होड़ थी। प्रांगण में घुसते ही शाही द्वारपाल और अनेक स्थानों पर विद्यार्थी अतिथियों को करबद्ध प्रणाम करते थे। मुख्य द्वार पर अतिथियों का तिलक कर स्वागत किया गया।

अपनी मौलिक संस्कृति का दिग्दर्शन कराने वाली प्रदर्शनियाँ लगायीं गयीं, हाट-बाजार सजे, बच्चों ने तरह-तरह की ज्ञानवर्धक प्रतियोगिताएँ आयोजित कीं और विजेताओं को तत्काल पुरस्कार भी प्रदान किये। सब कुछ पर्यावरण की अनुकूलता को ध्यान में रखते हुए किया गया था।

प्रतिदिन की सज्जा एवं कार्यक्रमों की प्रस्तुति मिशन के अलग-अलग आन्दोलनों पर आधारित थी। इसमें विद्यार्थियों के विवेक, ज्ञान, कौशल की अच्छी परीक्षा हुई। सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शनों को पुरस्कृत किया गया। परम्पराओं को नयी सार्थक दिशा मिली।

विद्यार्थियों ने उकेरी झाँकियाँ : झोंपड़ी में बाल गणेश और सरस्वती की वीणा से निकले गणेश

योग प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर

शांतिकुंज में

शिविर की तिथियाँ :
1 से 7 नवम्बर 2016, 5 से 12 दिसम्बर 2016 और 5 से 12 जनवरी 2017

योग भारतीय संस्कृति का आधार है। यह व्यक्तित्व के समग्र (शारीरिक, मानसिक, आत्मिक) विकास का आधार है। नियमित योगाभ्यास से शरीर स्वस्थ रहता है, आत्मबल बढ़ता है, साहस जागता है, संवेदनाएँ उभरती हैं। आज के व्यक्तिगत जीवन में तरह-तरह के शारीरिक व मानसिक रोग, तनाव, क्रोध, आवेश, उद्विग्नता आदि का अचूक उपाय है योग। इसके सामूहिक प्रयोगों से सामाजिक सामंजस्य-सद्भाव बढ़ेगा, हिंसा, तनाव, नारी उत्पीड़न जैसी समस्याओं का समाधान होगा।

प्रसन्नता की बात है कि आज समाज में योग के प्रति जागरूकता बढ़ रही है। अपनी प्रत्येक शक्तिपीठ, शाखाओं में भी योगाभ्यास एवं प्रशिक्षण का नियमित क्रम चलना चाहिए। इसके लिए प्रशिक्षक तैयार करने की दृष्टि से शांतिकुंज में विशेष सात दिवसीय शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। जो भाई-बहिन इसमें भाग लेना चाहते हैं, वे अतिशीघ्र शांतिकुंज के शिविर विभाग को अपना आवेदन ई-मेल, व्हॉट्सएप, फोन, पत्र, फैक्स से भेज दें। प्रतिभागियों की आयु सीमा 18 से 50 वर्ष होनी चाहिए। अत्यधिक बीमार परिजन आवेदन न करें।

शिविर विभाग : ई-मेल : shivir@awgp.in,
फोन : 9258360655 **व्हॉट्सएप :** 9258369749

उत्तराखंड राज्य की टेबल टेनिस प्रतियोगिता में गायत्री विद्यापीठ का शानदार प्रदर्शन

राष्ट्रीय स्तर पर खेलेंगे अनन्या और योगेश्वरी

आदरणीया जीजी-डॉ. साहब के साथ प्रतियोगिता में भाग लेने गये खिलाड़ी व शिक्षक

गायत्री विद्यापीठ के टेबल टेनिस खिलाड़ियों ने देहरादून में आयोजित राज्य स्तरीय प्रतियोगिता में भाग लेकर कई वैजयंतियाँ प्राप्त करते हुए अपने विद्यालय एवं शांतिकुंज परिवार को गौरवान्वित किया है। राज्य के विभिन्न जिलों से आयी 22 विद्यालयों की टीमों ने इसमें भाग लिया। गायत्री विद्यापीठ की बालिका वर्ग (जूनियर) टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। बालिका वर्ग (सीनियर) की टीम दूसरे स्थान पर रही। बालक वर्ग (सीनियर) की टीम क्वार्टर फाइनल तक खेलने में सफल रही।

वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री हरीश ठक्कर के संग अपनी खुशियाँ बाँटते बच्चे

इन प्रतियोगिताओं में खेलते हुए गायत्री विद्यापीठ में कक्षा 5वीं की छात्रा अनन्या त्रिपाठी एवं 7वीं कक्षा की छात्रा योगेश्वरी तेजरा का चयन राष्ट्रीय टेबल टेनिस प्रतियोगिता के लिए किया गया है, जो आगामी दिसम्बर माह में आयोजित होने जा रही है।

उल्लेखनीय है कि दोनों ही खिलाड़ी शांतिकुंज के कार्यकर्त्ता क्रमशः श्री रंजन त्रिपाठी एवं श्री ओमप्रकाश तेजरा की आत्मजा हैं।

आदरणीया जीजी, आदरणीय डॉ. साहब ने सभी प्रतिभागी बच्चों का उत्साहवर्धन करते हुए उन्हें अपनी कड़ी मेहनत और पक्की लगन के साथ सफलता के सोपानों पर चढ़ते जाने के आशीष दिये। आदरणीय श्री गौरीशंकर शर्मा जी, श्री हरीश ठक्कर आदि वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने भी इस शानदार सफलता के लिए बच्चों का अभिनन्दन किया।

जन-जन तक सद्विचारों का प्रकाश पहुँचा रहे हैं ज्ञानरथ

लखनऊ के 251 सार्वजनिक पुस्तकालयों में स्थापित हुआ सम्पूर्ण वाङ्मय साहित्य

अद्वितीय संकल्प, अटूट निष्ठा को मिली असाधारण सफलता

- राजभवन, विधान सभा से लेकर नगर और आसपास के जिलों के शैक्षिक प्रतिष्ठानों, अनुसंधान केन्द्रों, औद्योगिक केन्द्रों, समाचार पत्र के मुख्यालयों में हुई है वाङ्मय स्थापना

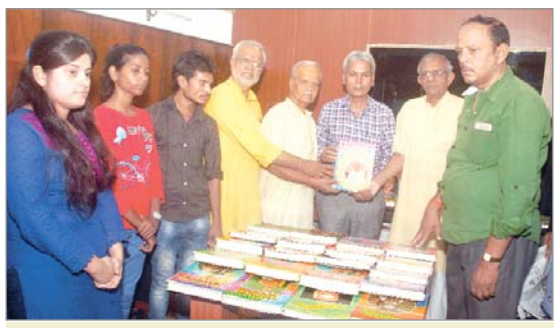

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक विश्ववार्ता में 249वें वाङ्मय साहित्य सेट की स्थापना स्थापना कराते डॉ. नरेन्द्र देव, उमानंद शर्मा एवं उदयभान सिंह भदौरिया

लखनऊ (उत्तर प्रदेश)

गायत्री ज्ञान मंदिर, इंदिरा नगर ने जन्म शताब्दी महोत्सव में लखनऊ और आसपास के 108 प्रतिष्ठित पुस्तकालयों में परम पूज्य गुरुदेव का सम्पूर्ण वाङ्मय (70 खंड) स्थापित करने का संकल्प लिया था। क्रमशः मिलती सफलता के साथ उत्साह बढ़ता गया। 108 स्थानों पर वाङ्मय स्थापना का संकल्प पूरा होने के बाद लक्ष्य बढ़ाकर 251 पुस्तकालय कर दिया गया। यह महान संकल्प भी मैनेजमेण्ट फैकल्टी ऑफ जी.सी.आर.जी. ग्रुप के पुस्तकालय में वाङ्मय स्थापना के साथ पूरा हो गया। यह साहित्य श्री संदीप गुप्ता एवं डॉ. प्रीति गुप्ता ने अपने पूर्वजों की स्मृति में भेंट किया है।

संकल्पित अभियान के अंतर्गत मिशन को अपना पूरा जीवन समर्पित करने वाले गायत्री ज्ञान मंदिर, इंदिरा नगर के मुख्य ट्रस्टी श्री उमानंद शर्मा, डॉ. नरेन्द्र देव, उदयभान सिंह भदौरिया आदि ने अथक पुरुषार्थ किया। नगर का शायद ही ऐसा कोई महत्त्वपूर्ण पुस्तकालय हो जहाँ परम पूज्य गुरुदेव के क्रान्तिकारी विचारों का प्रकाश न पहुँचा हो।

सद्ज्ञान के प्रकाश का यह एतिहासिक पड़ाव जन सहयोग से ही पूरा हुआ है। समर्थ परिजनों ने अपने जन्मदिन, विवाह दिन के उपलक्ष्य में या पूर्वजों की स्मृति में इस वाङ्मय साहित्य की स्थापना विभिन्न पुस्तकालयों में करायी है। साहित्य स्थापना समारोहों में उपस्थित लोगों में भी युगऋषि की लिखी पुस्तकें निःशुल्क वितरित की जाती हैं।

249वें सेट की स्थापना राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक विश्ववार्ता के संदर्भ पुस्तकालय में वी.पी. सविता ने अपनी स्वर्गीय माता श्रीमती रामकुंवर की स्मृति में करायी। समाचार पत्र के सम्पादक श्री सियाराम पाण्डेय ने अपने समाचार पत्र में प्रतिदिन इस वाङ्मय का एक अंश युगऋषि के चित्र के साथ प्रकाशित करने का आशवासन दिया।

250वें साहित्य सेट की स्थापना राजेन्द्र सिंह कमलादेवी महाविद्यालय, गगनपुर, सीतापुर के पुस्तकालय में हुई। इसे श्री डी.पी. सिंह ने अपनी धर्मपत्नी स्व. संगीता सिंह की स्मृति में स्थापित कराया।

उत्साह कम नहीं हुआ है, बल्कि सफलता के इस पड़ाव के साथ बढ़ा ही है। लखनऊ के कर्मठ परिजनों द्वारा ज्ञान आलोक वितरण का यह अभियान नये लक्ष्य के साथ निर्बाध रूप से चलता ही रहेगा।

वयोवृद्ध फौजी चलाते नित्य ज्ञानरथ

कानपुर देहात (उ.प्र.) : सच्ची लगन और काम करने का उत्साह हो, तो उम्र कोई बाधा नहीं डालती। इसे कर दिखाया है वयोवृद्ध कर्मठ रमपुरा के परिजन फौजी यादव ने। इन्होंने पु. गुरुदेव के वचारों को गाँव गाँव घूमकर घर घर में फैलाने का जिम्मा अपने कंधों पर लिया।

झोला पुस्तकालय से शरुआत कर साइकिल पुस्तकालय अब टीवीएस मोपेड को ज्ञानरथ के रूप में सजाकर कानपुर देहात के आसपास के 500 से अधिक गाँवों में पूज्यवर के साहित्य का प्रचार प्रसार कर रहे है। इसके साथ ही नशा उन्मूलन अभियान पर कार्य करते हुए योग, प्राणायाम तथा एक्यूप्रेशर जैसी विधियों से स्वस्थ रहने की वैकल्पिक चिकित्सा भी लोगों को सिखा रहे हैं। उनके इस सेवाभाव से युवा वर्ग काफी प्रभावित हो रहा हैं।

अब तक कानपुर देहात व कन्नौज जिले के सैकड़ों गाँवों में घूम-घूमकर लोगों को पूज्यवर की संजीवनी विद्या से आलोकित किया है। उनके लगन और उत्साह की क्षेत्र के लोग मुक्त कंठ से सराहना कर रहे हैं।

अलवर में ज्ञानरथ का शुभारंभ

अलवर (राजस्थान) : गायत्री शक्तिपीठ करौली कुण्ड द्वारा गुरुदेव के विचारों को गाँव-गाँव, घर-घर पहुँचाने के संकल्प के साथ नये ज्ञानरथ का शुभारंभ किया गया है। इसका लोकार्पण 27 जुलाई को पुलिस अकादमी अलवर के कमाण्डेण्ट और जोनल प्रतिनिधि श्री भैरूलाल जाट द्वारा किया गया।

वार्षिकोत्सव पर उभरा संकल्प

भरतपुर (राज.): गायत्री शक्तिपीठ भरतपुर के 17वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित हुए। यज्ञीय आयोजन के साथ दीवार लेखन एवं शृंखलाबद्ध दीपयज्ञ व विद्या विस्तार से लिए जन-जन तक युगसाहित्य पहुंचाने के लिए विभिन्न मण्डलों का गठन किया गया।

इस अवसर पर श्री वेदप्रकाश बंसल ने विद्याविस्तार के उद्देश्य से चल पुस्तकालय चलाने के लिए ज्ञानरथ तैयार करने संकल्प लिया। उत्साहित परिजनों ने जिलेभर में चार और ज्ञानरथ चलाने के लिए संकल्प लिए।

प्रज्ञा अभियान
1 अक्टूबर 2016

शिक्षक दिवस पर कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या जी का संदेश

आदर्श शिक्षक बनो, नयी पीढ़ी को गढ़ो

माननीय डॉ. प्रणव पण्ड्या
कुलाधिपति

विद्यादान सबसे बड़ा दान है। शिक्षक होना सबसे बड़े गौरव की बात है। पूर्व राष्ट्रपति डॉ. राधाकृष्णन् ने शिक्षक बनकर नये व्यक्तित्वों का निर्माण करने को बेहतर समझा, इसीलिए दूसरे कार्यकाल में राष्ट्रपति बनना अस्वीकार कर दिया। डॉ. अब्दुल कलाम जीवन भर विद्यार्थियों को पढ़ाते और उनमें नवनिर्माण की उमंग जगाते रहे।

हमारे समाज को डॉ. राधाकृष्णन, आचार्य श्रीराम शर्मा जैसे आदर्श शिक्षकों की आवश्यकता है। देश को आशा, उत्साह, सकारात्मकता, सृजनशीलता से भरी एक नयी पीढ़ी की आवश्यकता है, जो सारे विश्व में देव संस्कृति की कीर्ति पताका फहरा सके। मैं आप सबसे एक आदर्श शिक्षक बनने का आह्वान करता हूँ। आदर्श शिक्षक वह है जो अपने आचरण से शिक्षा दे सके, ज्ञानार्जन और ज्ञानदान की ऋषि परम्परा को निभा सके। पैसा ही सबकुछ नहीं है, आदर्शों के लिए जीना मनुष्यता का गौरव है।

मान. कुलाधिपति जी गंगातीर पर अपने विद्यार्थियों को परा चेतना के उन्नयन के लिए ध्यान कराते हुए

गुरु-शिष्य के आदर्श सम्बन्धों की अनुपम झाँकी

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में इस वर्ष शिक्षक दिवस एक निराले अंदाज में मनाया गया। शिक्षक दिवस समारोह भारत माता मंदिर के सामने धर्मगंगा घाट पर प्रातः 6 बजे आयोजित किया गया। कुलपति श्री शरद जी ने कुलाधिपति जी के आगमन पर पुष्पगुच्छ अर्पण कर विश्वविद्यालय परिवार की ओर से उनका भावभरा स्वागत किया। विद्यार्थियों ने गुरुवंदना की।

विशिष्ट ध्यान की अनुपम अनुभूति

ऊषा वेला में कलकल करती गंगा की सुमधुर ध्वनि और वर्षा की रिमझिम फुहारों के बीच परा चेतना के उन्नयन के लिए कुलाधिपति जी द्वारा कराया गया ध्यान विलक्षण था। उनके निर्देशों के साथ विद्यार्थी-आचार्य सभी गंगा की दिव्यता, शीतलता तथा सविता की प्रखरता को हृदयंगम करते रहे।

ध्यान के पश्चात् रिमझिम फुहारों के संग माँ गंगा और समस्त देवशक्तियों का आशीर्वाद मिला। इन्हीं फुहारों के बीच कुलाधिपति जी ने अपना संदेश दिया। बरसते पानी में भी विद्यार्थी बड़े उत्साह के साथ उन्हें सुनते रहे।

सांस्कृतिक कार्यक्रम

समारोह के अंतिम चरण में विद्यार्थियों ने कुछ गीत और नाटकों के माध्यम से अपने हृदय के भावों की श्रद्धांजलि कुलाधिपति जी सहित समस्त आचार्यों को अर्पित की। कुलाधिपति जी ने सभी आचार्यों को उपहार प्रदान करते हुए उनकी युग निर्माणी सेवा-भावनाओं का अभिनन्दन किया।

बायें : डॉ. प्रणव पण्ड्या जी डॉ. राधाकृष्णन जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण करते हुए
दायें : विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत सांस्कृतिक कार्यक्रम

यूरोपीय देशों और देसंविवि. के बीच शिक्षा-संस्कृति के आदान-प्रदान के नये अवसर

स्कॉलरशिप 'एरेसनस मुन्डस' के लिए नामित

देव संस्कृति विश्वविद्यालय को यूरोपियन यूनियन की प्रतिष्ठित स्कॉलरशिप एरेसनस मुन्डस के लिए नामित किया गया है। इसके मिलने से यूरोपियन के देशों के साथ देसंविवि के शैक्षिक कार्यक्रमों को साझा करना आसान हो गया है। इसके अनुसार देव संस्कृति विश्वविद्यालय यूरोपीय यूनियन के देशों के विश्वविद्यालयों के साथ परस्पर समझौते के आधार पर अपने विद्यार्थी, शिक्षकों के दल एक-दूसरे के यहाँ भेज सकेगा। वे वहाँ जाकर विभिन्न शोध परियोजनाओं (रिसर्च प्रोजेक्ट) पर कार्य कर सकेंगे और अपने शैक्षिक कार्यक्रमों को साझा कर सकेंगे। इन कार्यों के लिए उन्हें स्कॉलरशिप प्रदान की जायेगी।

काजीमीर्ज़ यूनिवर्सिटी के साथ एम.ओ.यू.

यह महत्त्वपूर्ण उपलब्धि देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रतिकुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या के यूरोपीय देशों के प्रवास के समय मिली। तद्नुसार पोलैण्ड की काजीमीर्ज़ यूनिवर्सिटी और देसंविवि के बीच साझा शैक्षिक कार्यक्रमों पर समझौता (एम.ओ.यू.) हुआ। डॉ. चिन्मय जी ने काजीमीर्ज़ यूनिवर्सिटी की निदेशक प्रो. अनिला बेकर, वाईस रेक्टर, प्रो. मारियूसस जावेदनायक, यूनेस्को चेयर प्रो. एनेक्सिजा इत्यादि से मिलकर इस एक्सचेन्ज प्रोग्राम को नई दिशा दी।

देसंविवि के कुलाधिपति डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने इस असाधारण उपलब्धि पर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने कहा कि इससे देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों के उत्साहभरे संकल्पों को नयी उड़ान मिलेगी, उनके शोधकार्यों में संसाधनों की कमी को पूरा किया जा सकेगा। उन्होंने देव संस्कृति के विस्तार की दिशा में इसे एक प्रशंसनीय कदम बताया।

यूनेस्को में क्रॉस कल्चरल कम्यूनिकेशन का प्रस्ताव

लंदन : डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने अपनी यूरोप की यात्रा के समय विश्व की प्रतिष्ठित संस्था यूनेस्को में क्रॉस कल्चरल कम्युनिकेशन विषय पर समझौतों का प्रस्ताव तैयार किया। इस ज्ञापन के अनुसार भविष्य में देव संस्कृति विश्वविद्यालय के द्वारा इस क्षेत्र में यूनेस्को के साथ नई भूमिका बना कर कार्य किए जाऐंगे।

डॉ. पण्ड्या की कॉमनवेल्थ यूनिवर्सिटी एसोसिएशन के सेक्रेटरी जनरल जॉन वुड के साथ मुलाकात हुई। उनके साथ हुई वार्ता के निष्कर्षों के अनुसार देव संस्कृति विश्वविद्यालय भविष्य निर्माण एवं आस्थापरक शिक्षा जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों पर अग्रणी भूमिका निभाएगा।

केन्द्रीय सुरक्षा बल, भेल की हरिद्वार इकाई में गुरुदेव के वाङ्मय की स्थापना

हरिद्वार (उत्तराखंड)

4 सितम्बर को केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल (सीआईएसएफ) की भारत हैवी इलैक्ट्रिकल्स लि. (भेल) की हरिद्वार इकाई के पुस्तकालय में युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य एवं अन्य विद्वानों द्वारा लिखे गये सत्साहित्य की समारोहपूर्वक स्थापना की गयी। यह स्थापना समारोह के मुख्य अतिथि

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी द्वारा की गयी स्थापना

देसंविवि के कुलाधिपति आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी द्वारा की गयी। इस अवसर पर भेल के महानिदेशक (एचआर) श्री एस.के. अग्रवाल, सहायक महाप्रबंधक (एचआर) श्री सिन्हा एवं सीआईएसएफ के कमाण्डेण्ड श्री शिवकुमार गुप्त प्रमुख रूप से उपस्थित थे।

इस अवसर पर आदरणीय डॉ. साहब ने कहा कि आज समाज की दिशा और दिशा को बदलने के लिए जिन उत्तम महापुरुषों की आवश्यकता है, उनका नितांत अभाव दिखाई देता है। ऐसे में महामानवों का साहित्य ही समाज को सही राह दिखा सकता है।

परम पूज्य गुरुदेव के साहित्य की विशेषता बताते हुए उन्होंने कहा कि इस विपुल साहित्य में जीवन का अनुभूत ज्ञान है, आज की समस्त समस्याओं का समाधान है। यह साहित्य संजीवनी हर वर्ग के हर व्यक्ति का मार्गदर्शन करने में समर्थ है।

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं बीएचईएल के महानिदेशक श्री अग्रवाल जी ने सीआईएसएफ के कमाण्डेण्ड श्री गुप्त को पर्यावरण संरक्षण की दिशा में सार्थक पहल करते हुए भेल की भूमि पर बृहद् वृक्षारोपण करने की प्रेरणा दी। उन्होंने इस कार्य के लिए परिसर में रह रहे लोगों में जागरूकता लाने की सलाह दी।

आदरणीय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी युगऋषि के वाङ्मय की स्थापना के समय प्रथम पूजन करते हुए

स्वच्छता पखवाड़ा मनाया

देसंविवि की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा 15 अगस्त से 31 अगस्त तक स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया। इसके अंतर्गत विश्वविद्यालय परिसर, आसपास के क्षेत्र एवं तीर्थक्षेत्र हर की पैड़ी में बृहद् स्तर पर स्वच्छता एवं स्वच्छता के लिए जनजागरूकता अभियान चलाया।

हर की पैड़ी पर निकाली गयी रैली

डेवेलपिंग लायब्रेरी नेटवर्क, दिल्ली ने आयोजित की कार्यशाला

कार्यशाला के प्रतिभागी विद्यार्थियों का समूह

दुनियाभर की प्रतिष्ठित लायब्रेरियों का लाभ देव संस्कृति विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों को दिलाने के प्रयासों के अंतर्गत 3 सितम्बर को देव संस्कृति विवि. में एक विशेष कार्यशाला आयोजित हुई। इसमें डेलनेट, डेवेलपिंग लायब्रेरी नेटवर्क, दिल्ली के प्रमुख अधिकारी उपस्थित हुए।

डेलनेट के निदेशक डॉ. एच.के. कौल ने अपनी संस्था द्वारा दुनियाभर के पुस्तकालयों को उनकी संस्था द्वारा उपलब्ध करायी जाने वाली पाठ्य सामग्री की जानकारी दी और बताया कि कैसे देसंविवि के विद्यार्थी उसका लाभ ले सकते हैं।

नेटवर्क मैनेजर डॉ. संगीता कौल ने बताया कि इस नेटवर्क से जुड़कर देश के 5500 से अधिक प्रतिष्ठित पुस्तकालय परम पूज्य गुरुदेव के क्रांतिकारी साहित्य का लाभ ले सकेंगे।

कार्यशाला का शुभारंभ देसंविवि के कुलपति माननीय श्री शरद पारधी जी ने अतिथियों के साथ दीप प्रज्वलन कर किया। उन्होंने डेलनेट के सहयोग से विद्यार्थियों द्वारा अच्छे साहित्य का चयन करने की सुविधा उपलब्ध होने पर प्रसन्नता व्यक्त की। देसंविवि की पुस्तकालय अध्यक्षा डॉ. कल्पना गायकवाड ने अतिथियों का स्वागत किया।

-: प्रमुख संपर्क सूत्र :-
(समय प्रातः 10 से सायं 5 बजे तक)
पूछताछ : 09258369725
email : pragyaabhiyan@awgp.in
डिस्पैच विभाग : 09258360665
email : dispatch@awgp.org
समाचार संपादन : news@awgp.in

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) श्रीरामपुरम, गायत्री नगर, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा सेंचुरी ऑफसेट प्रिंटर्स, ऋषिकेश में मुद्रित। संपादक- वीरेश्वर उपाध्याय
पता :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411.
फोन-(01334) 260602 फैक्स-(01334) 260866

Date of Publication: 27.9.2016
RNI-NO.38653/ 80
R.No.UA/DO/DDN/ 16 /2015-17
LICENCE TO POST
W.O. PREPAYMENT
vide No. WPP/ 04
RENEWED 2015- 2017